संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१५
वर्ष : २५ अंक : १
(निरंतर अंक : २७१)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)

✽ गुरुपूर्णिमा विशेषांक ✽

जिन्होंने सद्गुरु का ज्ञान पचाया है, वे समत्वयोग में स्थित होकर सम और निर्लिप्त रहते हैं। फिर उन्हें संसार की परिस्थितियाँ चलायमान नहीं कर सकतीं। ऐसे ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का पर्व है गुरुपूर्णिमा।
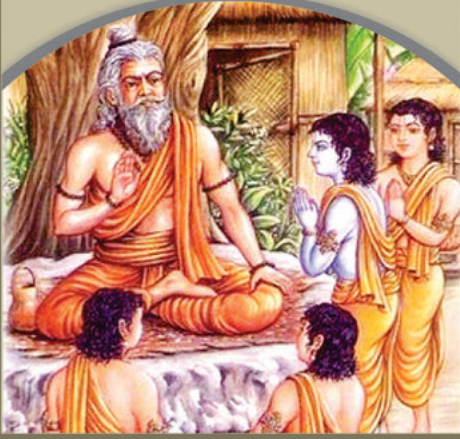
पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी की एक झलक पाने को देश-विदेश से जोधपुर पहुँचते हजारों साधक

'ऋषि प्रसाद' सेवादारों की सेवा सराहनीय है

पृष्ठ २९

✽ चतुर्थ अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन में उठी पूज्य बापूजी को रिहा करने की माँग पृष्ठ ६

✽ विज्ञान को अब समझ में आयी ध्यान की महिमा पृष्ठ २०

✽ वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य-सुरक्षा पृष्ठ ३१

बोगस केस का बड़ा खुलासा

गुरुपूर्णिमा-२०१५ से 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका का रजत जयंती वर्ष शुरू हो रहा है। 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका ने २४ वर्षों में २७० अंकों की गौरवपूर्ण यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण की है। इसकी इस सफलता पर हम पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में वंदन एवं आप सभी पाठकों का हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष पूज्य संत श्री आशारामजी बापू एवं अन्य महापुरुषों की अनुभव-सम्पन्न वाणी को समाज तक पहुँचानेवाली इस पावन पत्रिका को आप सभी पाठकों ने अत्यंत आदर-सम्मान देते हुए खूब प्रेम से पढ़ा और अनेक लोगों ने इसमें प्रकाशित अमृतवचनों को अपने आचरण में उतारकर अपना जीवन धन्य किया है, यह हमारे लिए आत्मसंतोष की बात है।

अनेक परोपकारी पुण्यात्मा भक्तों ने इस पत्रिका में दिये भक्तियोग व ज्ञानयोग के साथ निष्काम कर्मयोग से भी लाभान्वित होने हेतु घर-घर 'ऋषि प्रसाद' पहुँचाने की सेवा खोज ली और गीताज्ञान, गुरुज्ञान को समाज के कोने-कोने तक फैलाने का महान पुण्यलाभ प्राप्त किया है।

२५ वर्ष पहले गुजराती भाषा में एवं २४ वर्ष पहले हिन्दी भाषा में अंकुरित होनेवाला 'ऋषि प्रसाद' रूपी यह पौधा बहुत ही तीव्र गति से विकसित होता हुआ आज १० भाषाओं में एक विशाल वटवृक्ष के रूप में समाज के सभी वर्गों, सभी जातियों के त्रिविध तापों से तप्त असंख्य हृदयों को समान भाव से शीतलता प्रदान कर रहा है। अब तो इसके साथ मासिक विडियो डीवीडी 'ऋषि दर्शन' भी जन-जन के हृदय में आत्मरस, प्रभुप्रेम की रसधार उँडेल रही है और लोकप्रिय बनती जा रही है।

आत्मज्ञानी महापुरुषों के पावन प्रसाद को 'ऋषि प्रसाद' एवं 'ऋषि दर्शन' के माध्यम से समाज तक पहुँचाने में जो भी साझेदार हो रहे हैं, उन सभी पुण्यात्माओं, सज्जनों को भगवान और अधिक उत्साह दें तथा वे दीर्घायु हों। साहस, सच्चाई और स्नेह से वे भविष्य में भी इस दैवी कार्य में तत्परता से लगे रहें। ये पत्रिकाएँ भविष्य में भी आप सबके जीवन को भगवत्प्रसाद, भगवन्माधुर्य से संतृप्त करती रहें, ऐसा हमारा सतत प्रयत्न रहेगा।

- सम्पादक, ऋषि प्रसाद

ऋषि प्रसाद

इस अंक में

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २५ अंक : १ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २७१)
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१५
अधिक आषाढ़-आषाढ़ वि.सं. २०७२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३०० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६०० / -
(३) पंचवार्षिक: ₹ १५०० / -

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क
'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site : www.rishiprasad.org
www. ashram.org

(१) 'ऋषि प्रसाद' रजत जयंती वर्ष २०१५-१६ — २
(२) बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया, जीवन का उद्देश्य समझाया — ४
(३) स्वतंत्रता दिवस पर पूज्य बापूजी का संदेश — ५
(४) चतुर्थ अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन में उठी पूज्य बापूजी को रिहा करने की माँग — ६
(५) प्राणिमात्र के हित की कितनी चिंता ! — ९
(६) जोधपुर न्यायालय परिसर में पूज्य बापूजी द्वारा दिये गये संदेशों के अंश — १०
(७) संसार-बंधन से मुक्त होने का उपाय : सद्गुरु-सेवा — ११
(८) साधना में चार चाँद लगाती मानस-पूजा — १२
(९) बोगस केस का बड़ा खुलासा — १५
(१०) गुरु के सत्संग-सान्निध्य का मूल्य — १६
(११) आध्यात्मिक खजाना भरने का सुवर्णकाल : चतुर्मास — १८
(१२) आत्मज्ञान पाने तक सद्गुरु करते हैं मार्गदर्शन — २१
(१३) गुरुदेव को कैसे बुलायें ? — २३
(१४) विज्ञान को अब समझ में आयी ध्यान की महिमा — २४
(१५) गुरुकृपा है रक्षक और जीवन-परिवर्तक — २६
(१६) आध्यात्मिक उन्नति के १७ अद्भुत लक्षण — २८
(१७) इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें — २५
(१८) संत वाणी — २५
(१९) आत्मज्ञान से सराबोर पूज्य बापूजी के पत्र — ३०
(२०) विपरीतकरणी मुद्रा — ३१
(२१) कैसे बनें विद्यार्थी मेधावी व महान ? — ३२
(२२) 'ऋषि प्रसाद' सेवादारों की सेवा सराहनीय है — ३४
(२३) पाचन-संस्थान के रोगों का एक्यूप्रेशर द्वारा इलाज — ३६
(२४) वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य-सुरक्षा — ३७
(२५) यह सद्गुरु दरबार है (काव्य) — ३२
(२६) होमियो तुलसी गोलियाँ — ३८
(२७) होमियो पावर केयर — ३५
(२८) समाज को आलोकित करते सेवाकार्य — ३९
(२९) कितना खयाल रखते हैं बापूजी ! — ४१

बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया, जीवन का उद्देश्य समझाया

प्रातः उठकर ध्यान करें

भारतीय संस्कृति में मानवमात्र के कल्याण के अद्भुत रहस्य छिपे हैं। शास्त्रों का दोहन कर पूज्य बापूजी ने उन रहस्यों से लाभ उठाने की अनुपम युक्तियाँ बतायी हैं। प्रातः उठकर बिस्तर में ही ध्यान करने के अद्भुत लाभ बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं :

यदि ब्राह्ममुहूर्त में ५-१० मिनट के लिए आत्मा-परमात्मा का ठीक स्मरण हो जाय तो पूरे दिन के लिए एवं प्रतिदिन ऐसा करने पर पूरे जीवन के लिए काफी शक्ति मिल जाय।

यदि विद्यार्थी ब्राह्ममुहूर्त में उठकर ध्यान करे, सूर्योदय के समय ध्यान करे, ब्रह्मविद्या का अभ्यास करे तो वह शिक्षकों से थोड़ी लौकिक विद्या तो सीखेगा किंतु दूसरी विद्या उसके अंदर से ही प्रकट होने लगेगी । जो योगविद्या और ब्रह्मविद्या में आगे बढ़ते हैं, उनको लौकिक विद्या बड़ी आसानी से प्राप्त होती है । ब्रह्म-परमात्मा को जानने की विद्या को ही ब्रह्मविद्या कहते हैं।

ब्रह्मविद्या ब्राह्ममुहूर्त में बड़ी आसानी से फलती है । उस समय ध्यान करने से, ब्रह्मविद्या का अभ्यास करने से मनुष्य बड़ी आसानी से प्रगति कर सकता है।

अपना शरीर यदि मलिन लगता हो तो ऐसा ध्यान कर सकते हैं : 'मेरे मस्तक में भगवान शिव विराजमान हैं। उनकी जटा से गंगाजी की धवल धारा बह रही है और मेरे तन को पवित्र कर रही है। मूलाधार चक्र के नीचे शक्ति एवं ज्ञान का स्रोत निहित है । उसमें से शक्तिशाली धारा ऊपर की ओर बह रही है एवं मेरे ब्रह्मरंध्र तक के समग्र शरीर को पवित्र कर रही है। श्री सद्गुरु के चरणारविंद ब्रह्मरंध्र में प्रकट हो रहे हैं, ज्ञान-प्रकाश फैला रहे हैं।'

ऐसा ध्यान न कर सको तो मन-ही-मन गंगा

किनारे के पवित्र तीर्थों में चले जाओ। बद्री-केदार एवं गंगोत्री तक चले जाओ। उन पवित्र धामों में मन-ही-मन भावपूर्वक स्नान कर लो। ५-७ मिनट तक पावन तीर्थों में स्नान करने का चिंतन कर लोगे तो जीवन में पवित्रता आ जायेगी। घर-आँगन को स्वच्छ रखने के साथ-साथ इस प्रकार तन-मन को भी स्वस्थ, स्वच्छ एवं भावना के जल से पवित्र करने में जीवन के ५-७ मिनट प्रतिदिन लगा दोगे तो इससे कभी हानि नहीं होगी। इसमें तो लाभ-ही-लाभ है।

रात्रि को दस मिनट तक 'ॐ' का प्लुत उच्चारण करके ही सोयें। ऐसे ही सुबह भी 'ॐ' का गुंजन करें तो 'ॐ' का मानसिक जप बढ़ जायेगा। धीरे-धीरे ऐसी आदत पड़ जायेगी कि होंठ, जीभ नहीं हिलें और हृदय में जप चलता रहे व मन उसके अर्थ में और रस में उन्नत होता रहे। फिर जप करते-करते उसके अर्थ में ध्यान लगने लगेगा।

सुबह उठकर दो बातों को याद करो

सुबह उठो तब सबसे पहले परमात्मा को और मौत को याद कर लो : 'क्या पता कौन-से दिन इस जहाँ से चले जायें! आज सोमवार है, क्या पता कौन-से सोमवार को हम चले जायें! आज मंगलवार है, क्या पता कौन-से मंगलवार को हम विदा हो जायें!... इन सात दिनों में से कोई-न-कोई दिन होगा मौत का।'

ऐसा चिंतन करें

सुबह उठकर भी यदि सोचते हैं कि 'मैं दुःखी हूँ... मेरा कोई नहीं.... मैं लाचार हूँ...' तो पूरा दिन परेशानी और दुःख में बीतेगा। सुबह उठकर यदि आप यह सोचें कि 'दुःख तो बेवकूफी का फल है। चाहे कुछ भी हो जाय, मैं आज दुःखी होनेवाला नहीं। मेरा रब, प्रभु मेरे साथ है। मनुष्य-जन्म पाकर भी दुःखी और चिंतित रहना बड़ी शर्म की बात है। दुःखी और चिंतित तो वे रहें जिनका आत्मा-परमात्मा मर गया। मेरा आत्मा-परमात्मा तो ऐ रब! तू मौजूद है न! प्रभु तेरी जय हो!... आज तो मैं मौज में रहूँगा।' तो फिर देखो, आपका दिन कैसा गुजरता है।

आपका मन कल्पवृक्ष है। आप जैसा दृढ़ चिंतन करते हैं, वैसा होने लगता है। हाँ, दृढ़ चिंतन में आपकी सच्चाई होनी चाहिए।

ऐसा पक्का निर्णय करें

रोज सुबह उठो तब पक्का निर्णय करो कि 'आज अपने चित्त को प्रसन्न रखूँगा। दो-चार मनुष्यों के आँसू पोंछूँगा, उनके दुःख दूर करने का प्रयत्न करूँगा और चार मनुष्यों को हँसाऊँगा।' फिर पता चलेगा कि बिना स्वार्थ के कर्म करने में कितना आनंद आता है। फिर तो तुम्हारा व्यवहार ही साधना बन जायेगा। नियम से प्रतिदिन प्राणायाम-जप-ध्यान करोगे तो तुम्हारा हृदय खिलेगा।

विद्यार्थी ऐसा संकल्प करें

सुबह उठकर संकल्प करो : 'आज के दिन मैं समय का सदुपयोग करूँगा। खेलने के समय मन लगाकर खेलूँगा, पढ़ने के समय मन लगाकर पढ़ूँगा, काम करने के समय दिल लगाकर काम करूँगा और दिल लगाकर दाता (भगवान) का सुमिरन व ध्यान करूँगा।' (क्रमशः)

चतुर्थ अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन में उठी पूज्य बापूजी को रिहा करने की माँग

११ जून से १७ जून तक गोवा में चौथा अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसमें देश के १९ राज्यों के २२० हिन्दुत्ववादी संस्थाओं-संगठनों ने भाग लिया। संत श्री आशारामजी आश्रम की ओर से साध्वी रेखा बहन, श्री रामा भाई तथा आश्रम मीडिया प्रवक्ता नीलम दुबे अधिवेशन में सहभागी हुए। अधिवेशन में पूज्य बापूजी द्वारा भेजा गया संदेश भी पढ़ा गया, जिसे सुनकर उपस्थित लोगों ने बापूजी के सनातन धर्म व संस्कृति के प्रति अटूट प्रेम व परम निष्ठा को स्पष्टरूप से अनुभव किया तथा और अधिक उत्साह व दृढ़ता से संस्कृति-सेवा में लगने की प्रेरणा पायी।

इस ७ दिवसीय अधिवेशन में सनातन संस्कृति की रक्षा तथा प्रचार-प्रसार करने, संतों के खिलाफ हो रहे षड्यंत्रों के प्रति समाज में जागरूकता लाने, पूज्य बापूजी, साध्वी प्रज्ञा सिंह आदि संतों को त्वरित रिहा किये जाने, सनातन धर्मावलम्बियों पर हो रहे अत्याचारों के प्रति सभी हिन्दू संगठनों को एकजुट होकर कार्य करने, गौहत्याबंदी व धर्मांतरणबंदी कानून बनाये जाने आदि विषयों पर सम्बोधन व विचार-विमर्श किया गया एवं प्रस्ताव रखा गया तथा भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

अधिवेशन में शामिल हुए संगठनों व संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने पूज्य बापूजी का समर्थन किया। प्रस्तुत हैं कुछ वक्तव्य :

अधिवक्ता श्री संजीव पुनालेकर, राष्ट्रीय सचिव, हिन्दू विधिज्ञ परिषद : कानूनी रूप से देखो तो संत आशारामजी बापू के खिलाफ किये गये केस में कोई दम नहीं है। कोई खाली अपनी जुबान से बापूजी के खिलाफ कुछ गलत कह रहा है और वहाँ उपस्थित ५० या ६० महत्त्वपूर्ण व्यक्ति और हर व्यक्ति कह रहा है कि ऐसा नहीं हुआ।

एक लड़की जिसकी उम्र संदेहास्पद है, वह गवाही दे रही है, उसके सिवा कोई चश्मदीद गवाही नहीं दे रहा है। डेढ़ घंटे का वह तथाकथित प्रसंग बोल रही है लेकिन उस डेढ़ घंटे में बापूजी कुटिया में थे ही नहीं, बापूजी को एक समारोह में देखे हुए लोगों के बयान हैं, जिनको पुलिस ने महत्त्व नहीं दिया है। क्यों बापूजी की जमानत नहीं हो रही है और गुनहगारों की हो रही है, राजनेताओं की हो रही है ? बापूजी पर अन्याय और अत्याचार यह हिन्दू धर्म पर अत्याचार है।

अधिवक्ता श्री देवदास शिंदे, सचिव, हिन्दू स्वाभिमान प्रतिष्ठान तथा संगठक, शिव वंदना प्रतिष्ठान (पुणे) : सिर्फ एक झूठी एफआईआर के आधार पर एक संत को, जो हमारे लिए मेरुमणि हैं, उन्हें अंदर रख दिया है। क्यों ? इसीलिए कि वे धर्मांतरण के खिलाफ काम कर रहे हैं, लोगों के मन में धर्म और संस्कृति के प्रति निष्ठा जगा रहे हैं। हमारे साधु-संत पूरे निष्कलंक साबित हो के शीघ्र ही बाहर आयेंगे।

श्री अंतराम नरेश कुमार, अध्यक्ष, गौ-रक्षा दल, तेलंगाना : अभी नेताओं, अभिनेताओं को जल्दी-से-जल्दी न्यायालय से जमानत मिल रही है मगर संत आशारामजी बापू और अन्य संतों को अभी तक जमानत नहीं मिल रही है।

बापूजी देश ही नहीं, पूरे विश्व के लोगों को सत्संग, साधन-भजन के द्वारा भगवान का ज्ञान व शांति दे रहे हैं, दर्शन करवा रहे हैं। जिन आदिवासियों को, गरीब, वृद्ध, लाचारों को काम नहीं मिलता, खाना नहीं मिलता उन्हें अनाज और ५० रुपये बापूजी देते रहे हैं। यह बहुत बड़ी बात है। इसको सेवा बोलते हैं। बापूजी के नाम से जितने भी ट्रस्ट हैं, उनके द्वारा समाजसेवा बहुत हो रही है। बापूजी बाल संस्कार केन्द्र, युवा सेवा संघ आदि के माध्यम से आध्यात्मिकता द्वारा प्रजा को भगवद्ज्ञान का लाभ दिला रहे हैं। गौ-रक्षा दल माँग करता है कि जल्द-से-जल्द ऐसे पवित्र संत बापूजी को रिहा किया जाय। नहीं तो तेलंगाना के पूरे क्षेत्र में धरना करेंगे।

श्री गंगाधर कुलकर्णी, कर्नाटक संगठन-आयोजन सचिव, श्रीराम सेना, कर्नाटक : आज इस देश में एक षड्यंत्र चल रहा है हिन्दू धर्म को, उसकी भावनाओं को खत्म करने का। उसके परिणामस्वरूप साध्वी प्रज्ञा सिंहजी हों या संत आशारामजी बापू हों, ऐसे महान संतों पर झूठे इल्जाम लगा के पूरे धर्म को खत्म करने की कोशिश हो रही है, यह इस देश का दुर्भाग्य है।

पूज्य बापूजी कितने साल से इस देश के लिए, इस भव्य परम्परा के लिए, इस संस्कृति के लिए इतना उच्च कार्य कर रहे हैं ! उन पर ऐसे झूठे इल्जाम लगाते हुए शर्म आनी चाहिए ! धर्म के कार्य में उनके आशीर्वाद से हमें इस देश को आगे बढ़ाना है। पूज्य बापूजी को तुरंत रिहा किया जाना चाहिए।

श्री बपनचन्द्र देबनाथ, सचिव, केन्द्रीय कार्यालय, हिन्दू युवा मंच (असम) : भारत में कैसा अधर्म बढ़ा है अभी ! मसरत आलम को जमानत पर छोड़ दिया जाता है। एक उग्रपंथी को सरकार छोड़ देती है लेकिन संत आशारामजी बापू का दोष कुछ नहीं था फिर भी उन्हें नहीं छोड़ा गया है।

महात्मा बलरामदासजी, परिव्राजक एवं धर्मप्रसारक, सूरत (गुज.) : जब तरुण तेजपाल को जमानत मिल जाती है तो निर्दोष बापूजी को तो तुरंत जमानत मिल जानी चाहिए थी। यह एक षड्यंत्र है। उसी षड्यंत्र के तहत कांची कामकोटी पीठ के शंकराचार्य और दूसरे संतों को फँसाया गया।

महंत श्री नित्य शांतिमयानंद, नित्यानंद ध्यानपीठम् (बेंगलुरु) : परम पूज्य आशारामजी बापू के ऊपर जो आघात हो रहे हैं, वह बहुत गलत है, षड्यंत्र है। हम साफ-साफ देख सकते हैं कि केस में कोई दम नहीं है। पूज्य बापूजी जैसे संत जो धर्म का रक्षण करते हैं, उन पर ही आघात हो रहे हैं। हम समझ रहे हैं कि मीडिया का इस्तेमाल करके या किसी कानून का गलत इस्तेमाल करके कैसे यह सब किया जाता है। परम पूज्य आशारामजी बापू निर्दोष साबित होकर जल्द-से-जल्द बाहर आयेंगे, हमें पूरा विश्वास है।

श्री रामा भाई : पूज्य बापूजी ने देश-विदेश में अपने सत्संग के माध्यम से करोड़ों लोगों के जीवन को सनातन संस्कृति व सनातन धर्म के ज्ञान से सराबोर कर दिया । बच्चे, युवक-युवतियों को सही दिशा देने के लिए बाल संस्कार केन्द्रों, युवा सेवा संघों, महिला उत्थान मंडलों की स्थापना की । कीर्तन यात्राएँ, तुलसी पूजन दिवस, मातृ-पितृ पूजन दिवस, प्राकृतिक आपदाओं में राहत-सेवाकार्य (हाल ही में नेपाल में जब भूकम्प आया तो बापूजी का संदेश पाकर व्यापक स्तर पर राहतकार्य किये गये), गौशालाओं का निर्माण आदि तक ही बापूजी के सेवाकार्य सीमित नहीं हैं । सर्वविदित है कि जब से गुरुकुलों की स्थापना हुई और अच्छा परीक्षा-परिणाम आया, तब से ही आश्रम के प्रति षड्यंत्र शुरू हो गये । पहले गुरुकुलों को बदनाम करने का प्रयास किया गया । बापूजी ने सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए, भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए पूरे देश एवं विश्व में अभियान चलाया हुआ है ।
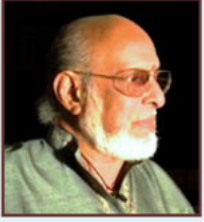
श्री गोविंद के. भरतन, वरिष्ठ अधिवक्ता, केरल उच्च न्यायालय : आज हर जगह हिन्दुओं को उत्पीड़ित किया जा रहा है, उन्हें लक्ष्य बनाया जा रहा है । अभी साध्वी प्रज्ञा सिंह, कप्तान प्रसाद पुरोहित एवं आशारामजी बापू को मिशनरियों द्वारा लक्ष्य बनाया गया ।

लॉर्ड मैकाले ने कहा था कि यदि आप भारत को गुलाम बनाना चाहते हैं या उस पर नियंत्रण करना चाहते हैं तो आपको देश की संस्कृति, धर्म एवं संस्कृत भाषा को अवश्य खत्म करना होगा ।

आशारामजी बापू के अनुयायियों की संख्या अत्यधिक है । हर जगह के लोग उनके प्रति आकर्षित होकर आते हैं । उनका जीवन परिवर्तित हो जाता है । यह हिन्दुत्व में एक जीवनीशक्ति बनती जा रही थी । अतः उनको फँसाना ही था । और किसीको फँसाने का सबसे आसान तरीका क्या है ? किसी स्त्री को उसके खिलाफ फरियाद दर्ज करने के लिए तैयार कर लो ।

यह मेरे साथ हो सकता है, यह आपके साथ हो सकता है, यह किसीके भी साथ हो सकता है ! यह बापूजी के खिलाफ एक षड्यंत्र है, केवल उनके ही खिलाफ नहीं बल्कि हिन्दुत्व को मिटाने के लिए, हिन्दुत्व के आधारों और पृष्ठभूमि को ध्वस्त करने के लिए, इस देश से मिटाने के लिए षड्यंत्र है ।

श्री प्रताप हाजरा, उपाध्यक्ष, भवानी सेना (प. बंगाल) : बापूजी ने बच्चों को कितने अच्छे संस्कार दिये ! जैसे - प्रणाम करना, नमस्ते करना - हम यह भूल गये थे, बापूजी ने फिर से गाँव-गाँव में शुरू कराया । तिलक लगाना और चोटी रखना हमने बापूजी के पास ही सीखा है । भारतीय संस्कृति को आज के जनजीवन में लाने के लिए बापूजी ने बहुत बड़ा योगदान दिया है । बापूजी ने जो किया है, उस पर भारत को गर्व होना चाहिए ।

भारतीय संस्कृति को जब बापूजी ने पुनः खड़ा कर दिया तो मिशनरियाँ, जो हिन्दू लोगों को ईसाई बनाने के लिए काम करती हैं, उन्होंने कुछ नेताओं के साथ मिल के बापूजी को फँसाया है । अब हम सबको संगठित होना चाहिए ।

डॉ. श्री जयंत आठवलेजी, संस्थापक, सनातन संस्था : लाखों लोगों की अपेक्षा एक संत को कष्ट दिया तो दुर्जनों के पापों का घड़ा शीघ्र भरता है । यह ज्ञात होने से मानव-जाति के हित के लिए बापूजी जैसे संत कष्ट भोग लेते हैं । आशारामजी बापू मानव-जाति के लिए कितना बड़ा त्याग कर रहे हैं ! कौन करेगा इतना ! शीघ्र ही उन दुर्जनों के पापों का घड़ा भरेगा और उन्हें ऐसे संतों को दिये कष्टों का अनंतगुना कष्ट भुगतना पड़ेगा ।

श्री उपानंद ब्रह्मचारी, अध्यक्ष, हिन्दू एक्जिस्टन्स फोरम (प. बंगाल) : बापूजी के साथ यह सब जो हो रहा है, कहीं-न-कहीं राजनीति से प्रेरित है। अब तो उन्हें जमानत मिलनी चाहिए।

श्री विनोद कुमार सर्वोदय, अध्यक्ष, सांस्कृतिक गौरव संस्थान : आशारामजी बापू के विरुद्ध अभी तक कोई प्रमाण नहीं है, मेडिकल जाँच रिपोर्ट से भी कोई भी प्रमाण नहीं मिला है, फिर भी अनावश्यक रूप से उन्हें बंदी बना के रखना, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। यह किसी षड्यंत्र के अंतर्गत किया जा रहा है। हमारे हिन्दू संतों का निरादर करना, अपमान करना - यह हमारे धर्म पर बहुत गहरी चोट है। यह हिन्दू धर्म का अपमान है। समाज को यह समझना चाहिए कि षड्यंत्र के तहत धर्मनिष्ठ संतों का अगर अपमान किया जायेगा तो हमारे धर्म की रक्षा कौन करेगा ?

श्री घनश्याम व्यास, निजामाबाद (तेलंगाना) : हमारे परम आदरणीय संत श्री आशारामजी बापू और साध्वी प्रज्ञासिंहजी ठाकुर कारागृह में बंदी बनाये हुए हैं, जिन पर किसी भी प्रकार का आरोप अभी तक सिद्ध नहीं हुआ है। यह बड़े शर्म की बात है कि किसीके अनर्गल लांछन लगानेमात्र से हमारे संतों को कारागृह में डाल दिया जाता है और जमानत नहीं दी जाती, वहीं दूसरी तरफ बलात्कारी जमानत पर घूम रहे हैं, जिन्होंने शराब पीकर गाड़ी चला के कइयों की हत्या की है ऐसे अभिनेता भी छूटे जा रहे हैं।

संत आशारामजी बापू की जमानत न होना यह हमारे लिए बहुत ही चिंता का विषय है क्योंकि हमारा धर्मकार्य परम पूज्य बापूजी के बाहर न होने से रुक गया है। इन दो वर्षों से धर्म को जो हानि पहुँच रही है, उसकी भरपाई कौन कर सकता है ? एक बहता हुआ झरना जब रुक जाता है तो प्राणी बेहाल हो जाते हैं। यही मैं हिन्दू समाज के लिए कहना चाहूँगा कि हिन्दू समाज आज प्यासा बैठा है परम आदरणीय बापूजी के बिना, उनके सत्संग-अमृत का पान करने के लिए।

प्राणिमात्र के हित की कितनी चिंता !

२३ जून २०१५ को जोधपुर जेल में एक श्रद्धा-भक्तिवाला पुलिस सिपाही पूज्य बापूजी से मिला। उसने पूज्यश्री को समस्या बतायी कि "मेरी पत्नी को ये-ये तकलीफ है।"

पूज्यश्री ने उसे एक सरल उपाय बताया। रात को १.३० बजे पूज्य बापूजी की नींद खुली। पूज्यश्री को लगा कि 'गर्मी चल रही है तो उस प्रयोग में संशोधन करना आवश्यक है।' पूज्यश्री दरवाजा ठोक के बोलने लगे : "सिपाही आ जा ! सिपाही आ जा !!"

१.३० बजे पूज्यश्री की नींद खुली और उस दुःखी व्यक्ति के हित का चिंतन चल रहा है। प्राणिमात्र के हित की कितनी चिंता !

पूज्यश्री तब तक आवाज लगाते रहे, जब तक वह सिपाही नहीं आया। आखिर वह आया। फिर उस प्रयोग में थोड़ा फेरफार करके पूज्यश्री ने उसे आँवला-मिश्री घोल लेने को कहा तथा पीपल के कोमल पत्तों का मुरब्बा बनाने की विधि बतायी एवं ७ से १० ग्राम रोज सेवन कराने को कहा। इसके लाभ हैं : इससे बहुत सारी स्त्री-समस्याओं से मुक्ति होगी, शक्ति-बल भी बढ़ेगा। स्त्री-संबंधी मासिक तथा दूसरे भयंकर रोग सदा के लिए भाग जायेंगे। व्यर्थ की गर्मी व कमजोरी भी सदा के लिए भाग जायेगी। (पीपल का मुरब्बा बनाने की विधि हेतु पढ़ें लोक कल्याण सेतु, मार्च २०१२)

जोधपुर न्यायालय परिसर में पूज्य बापूजी द्वारा दिये गये संदेशों के अंश

चैनलवाले : क्या आपको ईश्वर पर विश्वास है बापू ?

पूज्यश्री : जो ईश्वर पर विश्वास नहीं कर सकता वह तो फिर अनाथ है, असहाय है, शराब पर विश्वास करेगा, आत्महत्या करेगा ।

आपसी फूट डालनेवालों से सावधान करते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : जो लोग अफवाह फैलाते हैं सुब्रमण्यम स्वामी के प्रति अथवा आश्रमवासियों के प्रति, उनसे सावधान रहें । मेरा कोई बुरा नहीं चाहता । किसी पर कलंक ना लगे ।

चैनलवाले : कौन लगा रहे हैं कलंक ?

पूज्यश्री : लोग तो लगा रहे हैं कि आश्रमवासी नहीं चाहते बापू बाहर आयें । लेकिन ऐसा नहीं है । मेरी ४००-५०० बेटियाँ हैं, सब वफादार हैं । मेरे शरीर की बेटी तो बाद में खायेगी, मेरी मानसिक बेटियाँ पहले खायेंगी । मेरे शरीर का बेटा बाद में खायेगा, मेरे आश्रम के बेटे पहले खायेंगे । मेरा वचन है, ऐसा ही होता रहेगा ।

चैनलवाले : बापू ! आज आपके समर्थन में लगभग १ लाख ट्वीट हो चुके हैं ।

पूज्यश्री : मेरे समर्थन में १ लाख ट्वीट जिन्होंने किये हैं, उनको भी धन्यवाद है । सत्य की जय होगी, होगी, होगी ही !

स्वतंत्रता दिवस पर पूज्य बापूजी का संदेश

षड्यंत्रों से बचें, संयमी, साहसी और बुद्धिमान बनें

(१५ अगस्त १९९९ को दिया गया संदेश)

भारतवासियों में हनुमानजी जैसा बल-वीर्य, साहस, सेवाभाव और संयम आये । जब तक साहस, सेवा और संयम नहीं आयेंगे, तब तक एक ठग से, एक शोषक से बचेंगे तो दूसरे शोषक आकर शोषण करेंगे । होता भी ऐसे ही है । पहले शोषक राजाओं से बचे तो अंग्रेज शोषक आ गये, अंग्रेज शोषकों से बचे थोड़े-बहुत तो दूसरे आ गये । जब तक बल-वीर्य, साहस, संयम, सामर्थ्य नहीं होता, तब तक आजादी की बात पर भले खुशी मना लें लेकिन हम शोषित होते जा रहे हैं ।

इसलिए १५ अगस्त का यह संदेश है कि स्वतंत्रता दिवस की खुशियाँ मनानी हैं तो भले मना लो लेकिन खुशी मनाने के साथ खुशी शाश्वत रहे, ऐसी नजर रखो । इसके लिए देश को तोड़नेवाले षड्यंत्रों से बचें, संयमी और साहसी बनें, बुद्धिमान बनें । अपनी संस्कृति व उसके रक्षक संतों के प्रति श्रद्धा तोड़नेवालों की बातें मानकर अपने देश की जड़ें खोदने का दुर्भाग्य अपने हाथ में न आये । बड़ी कुर्बानी देकर आजादी मिली है । फिर यह आजादी विदेशी ताकतों के हाथ में चली न जाय, उसका ध्यान रखना ही १५ अगस्त के अवसर पर संदेश है ।

एक आजादी है सामाजिक ढंग की, दूसरी आजादी है जीवात्मा को परमात्मप्राप्ति की । दोनों प्रकार की आजादी प्राप्त कर लें । इसके लिए शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक बल की आवश्यकता है इसलिए शरीर स्वस्थ रहे, मन प्रसन्न रहे और बुद्धि में ज्ञान और ध्यान का प्रकाश बना रहे - ये तीनों चीजें आवश्यक हैं ।

संसार-बंधन से मुक्त होने का उपाय : सद्‌गुरु-सेवा

सद्‌गुरु की महिमा बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''हे उद्धव ! सद्‌गुरु के लक्षण बताते समय शब्द कम पड़ जाते हैं । जो सनातन पूर्णब्रह्म ही हैं, उन्हें लक्षण की क्या आवश्यकता है ? फिर भी एक लक्षण बताने का स्फुरण आता है कि उनमें सर्वत्र शांति दिखाई देती है । उद्धव ! वह शांति ही समाधान है, ब्रह्मज्ञान है और पूर्णब्रह्म है !''

सद्‌गुरु की विलक्षणता सुनकर शिष्य की कैसी दशा होती है, इस स्थिति का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं : ''सद्‌गुरु की ऐसी स्थिति जानकर शिष्य के मन में गुरुभक्ति के प्रति प्रीति और भी अधिक बढ़ गयी । इसलिए वह गुरु की खोज में निकल पड़ा, उसका अंतःकरण उसे विश्राम नहीं करने देता था । आठों पहर वह गुरु के लक्षणों का ही चिंतन करने लगा, 'उस सर्वसमर्थ को मैं कब देख पाऊँगा ? मेरा यह पाश कब छूटेगा ? मन को परम शांति कब प्राप्त होगी ?' इस प्रकार वह सद्‌गुरु के लिए पिपासा से भर गया । 'देखते-देखते यह आयुष्य समाप्त होने को आया है लेकिन मेरी अभी सद्‌गुरु से भेंट नहीं हो रही, यह मनुष्य-देह समाप्त होते ही सब कुछ डूब जायेगा ।' - ऐसा उसे लगने लगता है ।

गुरु का सिर्फ नाम सुनते ही वह मन से आगे भागने लगता है और उस वार्ता के ही गले लग जाता है, उसकी आतुरता इतनी बढ़ जाती है ! यदि सद्‌गुरु से प्रत्यक्ष भेंट नहीं होती तो वह मन से ही गुरुनाथ की पूजा करने लगता है और परम भक्ति से पूजा करते समय उसका प्रेम इतना अधिक उफन उठता है कि वह हृदय में नहीं समा पाता । नित्यकर्म करते समय भी वह एक क्षण के लिए भी गुरु को नहीं भूलता । वह निरंतर 'गुरु-गुरु' का जप करता रहता है । हे उद्धव ! गुरु के अतिरिक्त वह अन्य किसीका चिंतन नहीं करता । उठते-बैठते, खाते, सोते समय वह मन में गुरु का विस्मरण नहीं होने देता । जाग्रत तथा स्वप्नावस्था में भी उसे गुरु का निदिध्यासन लगा रहता है । देखो ! केवल गुरु का स्मरण करते ही उसमें भूख-प्यास सहने का सामर्थ्य आ जाता है । वह घर-बाहर के सुख को भूलकर सदा परमार्थ की ही ओर उन्मुख रहता है । सद्‌गुरु के प्रति जिसका ऐसा प्रेम रहता है, उसकी आस्था प्रतिस्पर्धा से बढ़ती ही जाती है । उसे गुरु के रूप में तत्काल चिद्‌घन चैतन्य ही दर्शन देता है । उत्कंठा जितनी अधिक रहती है, उतनी ही भेंट अधिक निकट होती है । भेंट के लिए साधनों में 'विशेष उत्कंठा' यही प्रमुख साधन है । अन्य कितने ही बड़े साधनों का प्रयोग क्यों न करें लेकिन आत्मज्ञान का अल्पांश भी हाथ नहीं लगेगा लेकिन यदि सद्‌गुरु के भजन में आधी घड़ी भी लगा देंगे तो आत्मज्ञान की राशियाँ झोली में आ जायेंगी ।

सद्‌गुरु के भजन में लगने से मोक्ष भी चरणों पर आ पड़ता है । लेकिन गुरु का भक्त उसे भी स्वीकार नहीं करता क्योंकि वह श्रीचरणों में ही तल्लीन रहता है । श्रीगुरु-चरणों का आकर्षण ऐसा होता है कि उसके सामने मोक्षसुख का भी विस्मरण होता है । जिनकी रुचि गुरु-भजन में नहीं होती, वे ही संसार के बंधन में पड़ते हैं । संसार का बंधन तोड़ने के लिए सद्‌गुरु की ही सेवा करना आवश्यक है । सद्‌गुरु की सेवा ही मेरा भजन है क्योंकि गुरु में और मुझमें कोई भेदभाव नहीं है । हे उद्धव ! इस प्रकार गुरुभक्तों की श्रद्धा कितनी असीम होती है और उन्हें गुरु-भजन के प्रति कितना प्रेम रहता है यह मैंने अभिरुचि के साथ, बिल्कुल स्पष्ट करके तुम्हें बताया है ।''

(श्री एकनाथी भागवत, अध्याय : १० से)

एक ऐतिहासिक घटित घटना है : जगन्नाथ मंदिर के दर्शन करके चैतन्य महाप्रभु कुछ दिन जगन्नाथपुरी में ही रहे थे । उस समय उत्कल (ओड़िशा) के बुद्धिमान राजा प्रतापरुद्र उनके दर्शन करना चाहते थे लेकिन चैतन्य महाप्रभु ने उनकी बात ठुकरा दी । राजा ने खूब प्रयत्न किये परंतु चैतन्य महाप्रभु नहीं माने । आखिर राजा ने ठान लिया कि 'कुछ भी हो, मैं इन महापुरुष की कृपा को पाकर ही रहूँगा।'

राजा की तीव्र इच्छा और दृढ़ता देखकर चैतन्य महाप्रभु के एक शिष्य ने कहा : ''राजन् ! परसों

जगन्नाथजी की रथयात्रा है। चैतन्य महाप्रभु रथ को खींचेंगे तब यात्रा शुरू होगी। फिर दोपहर में वे अमुक बगीचे में विश्राम करेंगे । आप सेवक के वेश में जाकर वहाँ सेवा-टहल करना । यदि आपकी सेवा स्वीकार हो जायेगी तो आपका काम बन जायेगा। जिसकी जिह्वा पर भगवान का निर्मल यशोगान होगा, चैतन्य महाप्रभु निश्चय ही उसे अपने हृदय से लगा लेंगे।''

प्रतापरुद्र ने वैसा ही किया। बगीचे में जमीन पर लेटे चैतन्य महाप्रभु के चरण सहलाने लगे। चरण सहलाते-सहलाते 'श्रीमद्भागवत' का 'गोपीगीत' मधुर स्वर से गुनगुनाने लगे । जिसे सुनकर चैतन्य महाप्रभु पुलकित हो उठे। उन्होंने कहा : ''फिर-फिर, आगे कहो... ।''

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ।।

'हे प्रभु ! तुम्हारी कथा अमृतस्वरूप है। विरह से सताये हुए लोगों के लिए तो यह जीवन-संजीवनी है,

जीवन-सर्वस्व ही है। बड़े-बड़े ज्ञानी, महात्माओं, भक्त-कवियों ने उसका गान किया है। यह सारे पापों को तो मिटाती ही है, साथ ही श्रवणमात्र से परम मंगल, परम कल्याण का दान भी करती है। यह परम सुंदर, परम मधुर और बहुत विस्तृत भी है। जो तुम्हारी इस लीला, कथा का गान करते हैं, वास्तव में भूलोक में वे ही सबसे बड़े दाता हैं।' (१०.३१.९)

यह श्लोक सुन चैतन्य महाप्रभु का हृदय छलका और उठकर राजा को गले लगा लिया : ''तू कौन है ? कहाँ से आया है ?''

राजा : ''यहीं का हूँ, उत्कल प्रांत का, आपके दासों का दास हूँ।''

''अरे भैया ! तुमने तो आज मुझे ऋणी बना दिया ! कितनी शांति दी ! भगवान की याद दिलानेवाला गोपीगीत तुमने कितना सुंदर गाया ! तुम क्या चाहते हो ?''

''महाराज ! आपकी कृपा चाहता हूँ।''

ऐसे करते-करते सद्गुरु की कृपा पायी राजा प्रतापरुद्र ने।

कितने वर्षों की मेहनत के बाद आत्मा में विश्रांति पाये व्यासस्वरूप गुरु मिलते हैं ! ऐसे गुरुओं का आदर-पूजन यह अपने आत्मा का ही आदर-पूजन है।

व्यासजी की स्मृति में आषाढ़ी पूनम मनानेवाले साधकों को देवताओं ने अमिट पुण्य की प्राप्ति का वरदान दिया। इस दिन सुबह संकल्प करना चाहिए कि 'आज व्यासपूर्णिमा को मैं अपने गुरुदेव का आदर-सत्कार, पूजन करूँगा। गुरु के सिद्धांत, मार्गदर्शन और कृपा का आवाहन करूँगा।'

इस प्रकार गुरुभाव करते-करते अपने हृदय को पावन करना चाहिए। शिवाजी महाराज जैसे गुरु को स्नान कराते थे, ऐसे हम लोग गुरु को स्नान नहीं करा पाते थे लेकिन मन-ही-मन गुरुदेव को हम स्नान कराते थे। मानस-पूजा का महत्त्व और विशेष होता है। जैसे भक्त षोडशोपचार से देवी-देवता या भगवान की पूजा करते हैं, ऐसे ही गुरुभक्त गुरु की पूजा करते हैं। अब गुरुजी को जल से, पंचामृत से स्नान कराना - यह तो सम्भव नहीं है लेकिन मानस-पूजा करने से गुरु भी नहीं रोक सकते और भगवान भी नहीं रोक सकते। जो प्रतिदिन गुरु का मानसिक पूजन करके फिर जप-ध्यान करते हैं, उनका जप-ध्यान दस गुना प्रभावशाली हो जाता है और अधिक एकाग्रता से करते हैं तो और दस गुना, मतलब सौ गुना लाभ हो जाता है। गुरुपूनम के दिन अगर गुरुदेव का मानसिक पूजन कर लिया तो गुरुपूनम का पर्व और चार चाँद ले आयेगा। तो गुरुजी को नहला दिया। गुरुजी को वस्त्र पहना दिये। फिर गुरुजी को तिलक किया, पुष्पों की माला पहनायी। गुरुजी को आदर से हाथ जोड़कर स्तुति करके कह रहे हैं : 'हे गुरुदेव ! आप साक्षात् परब्रह्म हो, सच्चिदानंदस्वरूप हो, अंतरात्मस्वरूप हो। ब्रह्मा-विष्णु-महेश, सर्वव्यापक चैतन्य और आप एक ही हैं।'

जब मन-ही-मन नहलाना तो सादे जल से क्यों नहलाना ? गंगोत्री का पावन जल है, तीर्थों का जल है। मन-ही-मन पहनाना तो सादे कपड़े क्यों पहनाना ? नये कोरे वस्त्र पहना दिये। चंदन लगा दिया, तिलक कर दिया। गुलाब व मोगरे की माला पहना दी। आरती कर दी, धूप कर दिया। अब बैठे हैं कि 'गुरुदेव ! हजारों जन्मों में पिता-माता मिले, उन्होंने जो दिया वह नश्वर लेकिन आपने जो दिया है वह काल का बाप भी नहीं छीन सकता। हे अकालपुरुष मेरे गुरुदेव ! आपके दिये हुए संस्कारों से दुःखों के माथे पर पैर रखने का सामर्थ्य आता है।'

संकल्पों का बड़ा बल होता है। शुभ संकल्प बड़ा प्रभाव दिखाते हैं। सद्गुरु शिष्य के लिए शुभ संकल्प करें तो शिष्य का भी फिर यह भाव हो जाता है : 'गुरुदेव ! हम बाहर की चीजें तो आपको क्या दें ! फिर भी

कुछ भी नहीं देंगे तो उऋण नहीं होंगे, कृतघ्न, गुणचोर हो जायेंगे इसलिए गुरुपूनम के निमित्त मत्था टेकते हैं और शुभ संकल्प करते हैं कि आपका स्वास्थ्य बढ़िया रहे, आपका आरोग्य धन बढ़ता रहे, आपका ज्ञानधन बढ़ता रहे, आपका प्रेमधन बढ़ता रहे, आपका परोपकार का यह महाभगीरथ कार्य और बढ़ता रहे तथा हमारे जैसे करोड़ों लोगों का कल्याण होता रहे। गुरुदेव ! आपका आनंद और छलकता रहे। आपकी कृपा हम जैसे करोड़ों पर बरसती रहे। हम जैसे-तैसे हैं, आपके हैं !

प्रभु मेरे अवगुन चित ना धरो।
समदरशी प्रभु नाम तिहारो, चाहो तो पार करो ॥'

यह शिष्य का शुभ भाव, शुभ संकल्प उसके हृदय को तो विशाल बनाता ही है, साथ ही गुरु के विशाल दैवी कार्य में भी सहायक बन जाता है।

शिष्य कहता है : 'एक लोहा कसाई के घर का और दूसरा ब्राह्मण के घर का है लेकिन पारस तो दोनों को सोना बनाता है, ऐसे ही हे गुरुवर ! हमारे गुण-अवगुण न देखिये। हम जैसे-तैसे हैं, आपके हैं। आपके वचनों में हमारी प्रीति बनी रहे। आप हमें परम उन्नत देखना चाहते हैं तो आपका शुभ संकल्प जल्दी फले। मेरे गुरुदेव ! सुख-दुःख में सम, मान-अपमान में सम, गरीबी-अमीरी में सम - ऐसा जो सच्चिदानंदस्वरूप का स्वभाव है, वैसा मेरा स्वभाव पुष्ट होता रहे।'

आत्मतीर्थ में जाने के लिए व्यासजी की आवश्यकता है। हमारी बिखरी हुई चेतना, वृत्तियों, जीवनशैली को, बिखरे हुए सर्वस्व को सुव्यवस्थित करके सुख-दुःख के सिर पर पैर रखकर परमात्मा तक पहुँचाने की व्यवस्था करने में जो सक्षम हैं और अकारण दयालु हैं, ऐसे सद्गुरुरूपी भगवान व्यास की आवश्यकता समाज को बहुत है। ऐसे व्यास अगर एकांत में चले जायें तो फिर गड़रिया-प्रवाह (विचारहीन, दिशाहीन होकर देखा-देखी एक-दूसरे का अनुसरण करते जाना) चलता रहेगा। श्रद्धालु तो लाखों-करोड़ों हैं लेकिन गुरुज्ञान के अभाव में श्रद्धा के फलस्वरूप जीवन में जो जगमगाहट, हृदय की प्रसन्नता, शांति, माधुर्य चाहिए, वह पूरा नहीं मिलता है। अन्य देवी-देवताओं की पूजा के बाद भी किसीकी पूजा रह जाती है लेकिन जो व्यासस्वरूप ब्रह्मज्ञानी गुरु हैं, उनकी पूजा के बाद किसी देव की पूजा बाकी नहीं रह जाती।

हरि हर आदिक जगत में पूज्य देव जो कोय।
सद्गुरु की पूजा किए सब की पूजा होय ॥

('विचारसागर' वेदांत ग्रंथ)

संत वाणी

बचन लगा गुरु ज्ञान का, रूखे लागे भोग।
इन्द्रकि पदवी लौ उन्हैं, चरनदास सब रोग ॥

संत चरणदासजी कहते हैं कि सद्गुरु के ज्ञान के वचन जिनके हृदय में टिक गये, उन्हें संसार के सभी भोग-विलास नीरस लगते हैं। इन्द्र की पदवी तक उन्हें रोग लगती है।

गुरु के आगे जाय करि, ऐसे बोलै बोल।
कछु कपट राखै नहीं, अरज करै मन खोल ॥

गुरु के सम्मुख जाकर इस प्रकार से बोल बोलने चाहिए कि मन में कुछ कपट रहे नहीं और दिल खोल के प्रार्थना रखी जाय।

- संत चरनदासजी

गुरु गोविन्द अरू संत सो, नहि अन्तर निरधार।
भक्ति ध्यान वैराग मग, खेइ उतारै पार ॥

- संत मलूकदासजी

बोगस केस का बड़ा खुलासा

पूज्य बापूजी के खिलाफ रचे गये षड्यंत्र की पर्तें अब खुलती जा रही हैं। किस तरह एक सुनियोजित तरीके से बापूजी के खिलाफ झूठे सबूत व गवाह खड़े किये गये, इसकी पोल ८ जुलाई २०१५ को जोधपुर सत्र न्यायालय में दिये गये सुधा पटेल के बयान से खुल गयी है।

पुलिस द्वारा दर्ज आरोप-पत्र में सुधा पटेल के नाम पर लिखे गये बयान में जिन वाहियात बातों का जिक्र किया गया था, सुधा ने उन बातों को झूठी, कपोलकल्पित बताया। सुधा ने पुलिस के सबसे बड़े झूठ का खुलासा करते हुए कहा कि पुलिसवालों ने दिनांक १६ सितम्बर २०१३ को मेरे बयान लिये थे, यह गलत (झूठी बात) है। आज से पहले मैं कभी भी जोधपुर नहीं आयी थी। जोधपुर पुलिस अहमदाबाद आयी थी। मुझसे जोधपुर पुलिस ने कोई पूछताछ नहीं की थी। पुलिस ने मुझसे हस्ताक्षर करवाये थे लेकिन मुझे पता नहीं है कि पुलिसवालों ने मेरे हस्ताक्षर किस बात के करवाये थे।

पुलिस किस प्रकार व्यक्ति से पूछताछ किये बगैर तथा बयान लिये बगैर बनावटी, बोगस बयान तैयार करके अपना दबाव बनाकर उन पर हस्ताक्षर ले के झूठे बयानों का पुलिंदा खड़ा करती है, यह सुधा के बयान से अब सबके सामने आ गया है।

पुलिस द्वारा आरोप-पत्र में वर्णित मनगढ़ंत कहानी की पोल खोलते हुए सुधा पटेल ने न्यायालय को बताया कि मैं मेरी मर्जी से महिला आश्रम, मोटेरा (अहमदाबाद) में दस साल तक रही। मेरे साथ वहाँ कुछ गलत नहीं हुआ था। मैंने बापूजी के द्वारा किसी भी अन्य अनुयायी या महिला के साथ कोई गलत व्यवहार नहीं देखा था। यह कहना गलत है कि मैंने आश्रम में कई घटनाएँ, जो आपत्तिजनक हुई हों, उनको पुलिसवालों को बयान देते वक्त बताया हो। आश्रम में कोई भी आपत्तिजनक घटनाएँ नहीं हुई थीं, न ही मैंने पुलिसवालों को ऐसी कोई घटना बतायी है।

सुधा ने न्यायालय में दिये अपने बयान में यह भी स्पष्ट किया कि यह कहना गलत है कि मुझे और मेरे भाई को आश्रम से कोई धमकियाँ मिली हों। मुझे आश्रम द्वारा कोई लालच भी नहीं दिया गया। मैं बिना किसी भय या डर के आज यहाँ न्यायालय में बयान दे रही हूँ।

यह समझने की बात है कि महिला आश्रम, अहमदाबाद व छिंदवाड़ा की बेटियों को गहने व अन्य प्रलोभन देकर 'हमारे साथ भी ऐसा हुआ था'- ऐसे झूठे आरोप लगाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया गया पर बापूजी की एक भी खानदानी बेटी पैसे और धन के प्रलोभन में नहीं आयी। सुधा ने तो इनकी पोल ही खोलकर रख दी।

(संदर्भ : न्यूज पोस्ट, इंडिया टुडे, आउटलुक, दैनिक भास्कर, जी न्यूज, आईबीएन ७ आदि से;
संकलक : श्री रवीश राय)

गुरु के सत्संग-सान्निध्य का मूल्य

- पूज्य बापूजी
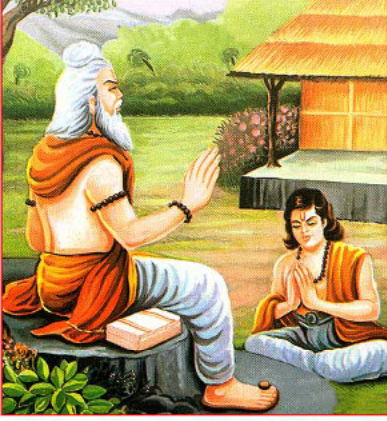
बाबा गम्भीरनाथ नाथ सम्प्रदाय के एक सिद्ध योगी थे । एक बार वे गया के पास एक पहाड़ पर विराजमान थे । उन्हें भीड़ बिल्कुल पसंद न थी किंतु जब साधक दर्शन के लिए आते तो उन्हें सत्संगामृत का पान कराते ।

जिस पहाड़ पर बाबाजी विराजमान थे, उसी पहाड़ की तलहटी में चोर-लुटेरों का एक गाँव था । पहाड़ पर होनेवाली चहल-पहल उन लुटेरों की नजर में आ गयी । उन लुटेरों ने अनुमान लगाया कि भक्तगण दर्शन के लिए जाते हैं तो बाबाजी के पास खूब माल-सामान एकत्र हुआ होगा ।

मार्ग पर आते-जाते साधकों को लूटने से उनका आना-जाना बंद हो जायेगा इस डर से लुटेरों ने बाबाजी को ही लूटने की योजना बनायी । एक रात्रि में वे बाबाजी की कुटिया पर डाका डालने गये । पहले तो पत्थरबाजी करके लुटेरों ने उन्हें डराना चाहा । पत्थरों के गिरने की आवाज सुनकर एक भक्त ने बाबाजी को बताया : ''पहाड़ की तराई में लुटेरों की बस्ती है और वे लोग ही चोरी करने आये हैं ।''

''इतनी-सी बात है !'' ऐसा कहकर बाबाजी बाहर निकले और जोर से आवाज लगाते हुए कहा : ''अरे भाइयो ! पत्थर मारने की जरूरत नहीं है । तुमको जो चाहिए वह ले जाओ ।''

बाबाजी खुद ही चोरों को बुलाकर अंदर ले गये । सब सामान बताते हुए कहने लगे : ''जो सामान चाहिए, सब तुम्हारा ही है ।''

चोरों को बाबाजी की सरलता देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ । संतों की लीला तो संत ही जाने !

ज्यों केले के पात में, पात पात में पात ।
त्यों संतन की बात में, बात बात में बात ।।

चोरी के दिन के बाद भी रोज सत्संग होता रहा । ठीक १५ दिन के बाद लुटेरों ने पुनः द्वार खटखटाये । बाबाजी बोले : ''आओ-आओ, इस बार माल थोड़ा ज्यादा है । खुशी से ले जाओ ।''

पहली बार तो चोरी के विषय में किसीको कुछ पता न चल पाया किंतु दूसरी बार की चोरी के बाद भक्तों में चर्चा का विषय बन गया । 'गुरु के माल-सामान की सुरक्षा प्राणों से भी प्यारी होनी चाहिए । यह जगह सलामत नहीं है, अतः हमें स्थान बदल देना चाहिए । दान की चोरी तो उन्हें न जाने किस नरक में ले जायेगी !...' भक्तों के बीच होती यह खुसुर-फुसुर बाबाजी के कानों तक भी गयी । तब बाबाजी ने अधिकांश साधकों की इच्छा के अनुरूप स्थान बदलने का निश्चय किया । किंतु एक साधक माधोलाल ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक कहा : ''बाबाजी ! आप यहीं रहिये । किन पुण्यों के प्रताप से आपके सत्संग-सान्निध्य का लाभ हमें मिल रहा है, वह मैं नहीं जानता और उसके मूल्य का आकलन भी मैं नहीं कर सकता । आपने ही सत्संग के दौरान कहा था कि 'भगवान से भी सत्संग की महिमा ज्यादा है ।' बाबाजी ! मुझे सेवा का एक मौका दीजिये । लुटेरों को जो चाहिए, उस सीधा-सामान की पूर्ति मैं स्वयं कर दूँगा । यह शिष्य आपका दिया हुआ ही आपको अर्पण करता है । उसका सदुपयोग होने दीजिये । लुटेरों को बता दें

कि पंद्रह दिन की जगह रोज आयें। मुझे रोज सेवा का मौका मिलेगा।'' इतना कहकर माधोलाल बाबाजी के चरणों में गिर के रो पड़ा।

गुरु तो दया की खान होते हैं। बाबाजी ने एक साधक को गाँव में भेजकर लुटेरों के सरदार को बुलवाया और उससे कहा : ''देख भाई ! अब तुम्हें यहाँ तक आने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। तुम्हें जो भी सीधा-सामान चाहिए उसे यह माधोलाल तुम्हारे घर तक पहुँचा देगा।''

लुटेरों के सरदार को अत्यंत विस्मय हुआ। जब उसने पूरी बात सुनी तो उसका हृदय परिवर्तित हो गया और वह गद्गद कंठ से बोला : ''बाबाजी ! आप यहाँ मौज से रहें। अब आपको कोई भी परेशान नहीं करेगा। हमारे अपराधों को माफ कर दें।'' इतना कहते-कहते वह बाबाजी के चरणों में गिर पड़ा। बाबाजी ने भी उसके सिर पर प्रेमपूर्वक अपना करकमल रख दिया।

धन्य हैं वे सत्शिष्य, जो संतों के सान्निध्य एवं सत्संग की महिमा को जानते हैं ! ऐसे सत्शिष्यों का दिव्य भाव लुटेरों का भी हृदय बदल दे तो इसमें क्या आश्चर्य !

यह सद्गुरु दरबार है

यह सद्गुरु दरबार है,
सबको मिलता प्यार है।
राजा रंक सुखी दुःखियों
के लिए खुला ये द्वार है॥
परमेश्वर का ज्ञान-तत्त्व
हम जहाँ प्रकाशित पाते हैं।
वहीं हमें गुरुकृपा दिखती,
भवबंधन कट जाते हैं।
मिटता अहंकार है,
आता सत्य विचार है।
अपने तन या चंचल मन पर
हो जाता अधिकार है॥
गुरुमुख मानव दोषमुक्त हो
लघु से गुरु हो जाता है।
जो मनमुख है सुख के पथ में ही
अगणित दुःख पाता है।
मनमुख ही मझधार है,
गुरुमुख ही भवपार है।
वही जान पाता जैसा कुछ,
यह विचित्र संसार है॥
गुरु के संगी
निर्मोही निर्लोभी तत्त्व-ज्ञानी हैं।
लघु के संगी
तन-धन के लोभी मोही अभिमानी हैं।
गुरु के संग विचार है,
लघु के संग विकार है।
एक सभीको प्रिय होता है
एक भूमि का भार है॥
ज्ञानरूप गुरु की उपासना
सारे दोष मिटाती है।
कहीं ज्ञान को नहीं
भूलना उपासना कहलाती है।
उपासना ही सार है
इससे ही उद्धार है।
पथिक गुरुकृपा से
गुरुता का देख रहा विस्तार है॥

- संत श्री पथिकजी महाराज

*****

चतुर्मास में किया हुआ व्रत, जप, संयम, दान, स्नान बहुत अधिक फल देता है । इन दिनों में स्त्री-सहवास करने से मानव का पतन होता है । यही कारण है कि चतुर्मास में शादी-विवाह आदि सकाम कर्म नहीं किये जाते हैं ।

इन चार महीनों में जो ब्रह्मचर्य पालते हैं और धरती पर सोते हैं, उनकी तपस्या और उनका आध्यात्मिक विकास तोल-मोल के बाहर हो जाता है । पति-पत्नी होते हुए भी संयम रखें । किसीका अहित या बुरा सोचे नहीं, करे नहीं तथा 'मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं और सर्वत्र हैं' ऐसा नजरिया बना ले तो चार महीने में उसके पाप-ताप मिट जायेंगे और भगवान की शांति, प्रेरणा और ज्ञान यूँ मिलता है !

> इन चार महीनों में जो ब्रह्मचर्य पालते हैं और धरती पर सोते हैं, उनकी तपस्या और उनका आध्यात्मिक विकास तोल-मोल के बाहर हो जाता है ।

चतुर्मास व्रत रखनेवाले व्यक्ति को एक हजार अश्वमेध यज्ञ करने का फल सहज में मिलता है । चतुर्मास में मौन, भगवन्नाम-जप, शुभकर्म आदि का आश्रय लेकर हीन कर्म छोड़े और भगवान की स्मृति बढ़ाते हुए धरती पर (दरी या कम्बल बिछाकर) शयन करे अथवा गद्दा-तकिया हटाकर सादे पलंग पर शयन करे और 'नमो नारायणाय' का जप बढ़ा दे तो उसके चित्त में भगवान आ विराजते हैं ।

चतुर्मास में क्या त्यागने से क्या फल ?

* गुड़ के त्याग से मधुरता, तेल (लगाना, मालिश आदि) के त्याग से संतान दीर्घजीवी तथा सुगंधित तेल के त्याग से सौभाग्य की प्राप्ति होती है ।

* असत्य-भाषण, क्रोध, शहद और मैथुन के त्याग से अश्वमेध यज्ञ का फल होता है । यह उत्तम फल, उत्तम गति देने में सक्षम है ।

* चतुर्मास में परनिंदा का विशेष रूप से त्याग करें ।

परनिन्दा महापापं परनिन्दा महाभयम् ।
परनिन्दा महद्दुःखं न तस्याः पातकं परम् ॥

(स्कंद पुराण, ब्रा. खण्ड, चातुर्मास्य माहात्म्य : ४.२५)

परनिंदा से बड़ा कोई पाप नहीं है। और पाप हो जाने पर प्रायश्चित करने से माफ हो जाता है लेकिन परनिंदा तो जानबूझकर की है, उसका कोई प्रायश्चित नहीं है।

विशेष लाभदायी प्रयोग

* आँवला, तिल व बिल्वपत्र आदि से स्नान करें तो वायुदोष और पापदोष दूर होता है।
* वायु की तकलीफ हो तो बेल-पत्ते को धोकर एक काली मिर्च के साथ चबा के खा लें, ऊपर से थोड़ा पानी पी लें। यह बड़ा स्फूर्तिदायी भी रहेगा।
* पलाश के पत्तों में भोजन करने से ब्रह्मभाव की प्राप्ति होती है।
* इन दिनों कम भोजन करना चाहिए।
* जल में आँवला मिलाकर स्नान करने से पुरुष तेजवान होता है और नित्य महान पुण्य प्राप्त होता है।
* एकादशी का व्रत चतुर्मास में जरूर करना चाहिए।

बुद्धिशक्ति की वृद्धि हेतु

चतुर्मास में विष्णुजी के सामने खड़े होकर 'पुरुष सूक्त' का पाठ करनेवाले की बुद्धि बढ़ती है ('पुरुष सूक्त' के लिए पढ़ें ऋषि प्रसाद, जुलाई २०१२ का अंक)। बच्चों की बुद्धि अगर कमजोर हो तो 'पुरुष सूक्त' का पाठ भगवान नारायण के समक्ष करवाओ, बुद्धि बढ़ेगी। भ्रूमध्य में सूर्यनारायण का ध्यान करवाओ, बुद्धि बढ़ेगी।

स्वास्थ्य-रक्षक प्रयोग

बारिश के दिनों में धरती पर सूर्य की किरणें कम पड़ती हैं इसलिए जठराग्नि मंद पड़ जाती और वायु (गैस) की तकलीफ ज्यादा होती है। अतः ५० ग्राम जीरा व ५० ग्राम सौंफ सेंक लें। उसमें २०-२५ ग्राम काला नमक तथा थोड़ी इलायची मिला के पीसकर रख लें। वायु, अम्लपित्त (एसिडिटी), अजीर्ण, पेटदर्द, भूख की कमी हो तो १ चम्मच मिश्रण पानी से सेवन करें। इसमें थोड़ी सोंठ मिला सकते हैं।

दीर्घजीवी व यशस्वी होने हेतु

भगवान ब्रह्माजी कहते हैं :

सद्धर्मः सत्कथा चैव सत्सेवा दर्शनं सताम्।
विष्णुपूजा रतिर्दाने चातुर्मास्यसुदुर्लभा ॥

'सद्धर्म (सत्कर्म), सत्कथा, सत्पुरुषों की सेवा, संतों का दर्शन-सत्संग, भगवान का पूजन और दान में अनुराग - ये सब बातें चौमासे में दुर्लभ बतायी गयी हैं।'

(स्कंद पुराण, ब्रा. खण्ड, चातुर्मास्य माहात्म्य : ३.११)

ये सद्गुण तो मनुष्य को सारे इष्ट दे देते हैं, सारे सुखों की कुंजियाँ दे देते हैं। इनसे मनुष्य दीर्घजीवी, यशस्वी होता है। जप, सेवा सत्कर्म है, भूखे को अन्नदान करना सत्कर्म है और खुद अन्न का त्याग करके शास्त्र में बताये अनुसार उपवास करना यह तो परम सत्कर्म है।

सुबह उठकर संकल्प करें

देवशयनी एकादशी को सुबह उठकर संकल्प करना चाहिए कि 'यह चतुर्मास के आरम्भवाली एकादशी है। पापों का नाश करनेवाली यह एकादशी भगवान नारायण को प्रिय है। मैं भगवान नारायण, परमेश्वर को प्रणाम करता हूँ। कई नाम हैं प्यारे प्रभु के। आज के दिन मैं मौन रहूँगा, व्रत रखूँगा। भगवान क्षीर-सागर में कार्तिक शुक्ल एकादशी तक मौन, समाधिस्थ रहेंगे तो इन चार महीनों तक मैं धरती पर सोऊँगा और ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।'

एक वचन भिक्षा में दे दो

श्रावण मास, चतुर्मास शुरू हो रहा है तो मुझे भिक्षा में एक वचन दे दो कि '३, ६ या १२ महीने का ब्रह्मचर्य व्रत रखेंगे।' भीष्म पितामह, लीलाशाहजी बापू, अर्यमा देव को याद करना, वे आपको विकारों से बचने में मदद करेंगे।

ॐ अर्यमायै नमः। इस मंत्र से, प्राणायाम से ब्रह्मचर्य की रक्षा होती है।

जैसे संसार-व्यवहार से वीर्य-नाश होता है, वैसे बोलने से भी वीर्य का सूक्ष्म अंश खर्च होता है, अतः संकल्प करें कि 'हम मौन रहेंगे, कम बोलेंगे, सारगर्भित बोलेंगे।' रुपये-पैसों की आवश्यकता नहीं है; इतना भिक्षा में दे दो कि 'अब इस चतुर्मास में हे व्यासजी ! हे गुरुदेवो ! हे महापुरुषो ! आपकी प्रसादी पाने के लिए इस विकार का, इस गंदी आदत का हम त्याग करेंगे...।'
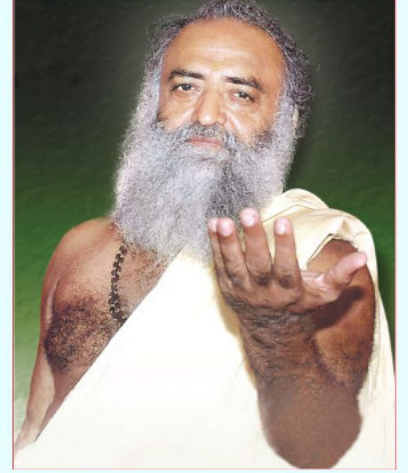
मैं ईश्वर की प्रीति के निमित्त व्रत रखता था, जप करता था और ईश्वर की प्रीति के निमित्त ही सेवाकार्य करता था।

जैसे किसान बुवाई करके थोड़ा आराम करता है और खेत के धन का इंतजार करता है, ऐसे ही चतुर्मास में आध्यात्मिक धन को भरने की शुरुआत होती है। हो सके तो सावन के महीने में एक समय भोजन करे, जप बढ़ा दे। हो सके तो किसी पवित्र स्थान पर अनुष्ठान करने के लिए चला जाय अथवा अपने घर में ही पूजा-कमरा बना दे। एक सुबह को नहा-धोकर ५ बजे पूजा-कमरे में चला जाय और दूसरी या तीसरी सुबह को निकले । मौन रहे, शरीर के अनुकूल फलाहार, अल्पाहार करे । अपना आध्यात्मिक खजाना बढ़ाये। 'आदर हो गया, अनादर हो गया, स्तुति हो गयी, निंदा हो गयी... कोई बात नहीं, हम तो करोड़ काम छोड़कर प्रभु को पायेंगे।' ऐसा दृढ़ निश्चय करे। बस, फिर तो प्रभु तुम्हारे हृदय में प्रकट होने का अवसर पैदा करेंगे।

आत्मज्ञान पाने तक सद्गुरु करते हैं मार्गदर्शन

- पूज्य बापूजी

भगताँ महाराज नाम के एक ब्राह्मण जोधपुर राज्य के फूलमाल गाँव में रहते थे। एक बार एक महात्मा उनके घर पधारे और उनकी गर्भवती पत्नी को देखकर बोले : ''देवी ! तुम्हारे गर्भ में संत का वास है।'' समय बीतने पर सुंदर-सलोने शिशु का जन्म हुआ पर पति-पत्नी चिंतित रहने लगे कि कहीं बेटा बड़ा होने पर साधु न हो जाय ! बेटे का नाम टीकम रखा। नन्हा टीकम रात में सोते समय पिताजी से पूछता : ''पिताजी ! भगवान कहाँ रहते हैं ? वे कैसे हैं ? हमें दिखते क्यों नहीं ? हम उन्हें बुलाते हैं तो सुनते क्यों नहीं ? आदमी मरता क्यों है ? मरकर भगवान के पास जाता है या और कहीं ? भगवान के दर्शन कैसे होते हैं ? क्या मुझे भी हो सकते हैं ?''

पिताजी एक प्रश्न का उत्तर देते तो दूसरा तैयार रहता। आखिर वे उत्तर देते-देते थक जाते और कहते : ''बेटा ! अब सो जा।''

टीकम : ''पिताजी ! आप ही कहते हैं न, कि 'सब काम भगवान करते हैं। उनकी मर्जी के बिना कुछ नहीं होता।' मुझे भगवान अभी सुला नहीं रहे हैं।''

पिताजी झुँझलाकर कहते : ''अच्छा महात्मा ! भगवान जब तुझे सुलायें तो सोना, मुझे सोने दे, भगवान मुझे सुला रहे हैं।'' पिताजी सो जाते पर टीकम पड़ा-पड़ा घंटों न जाने क्या सोचता रहता।

पिताजी कभी-कभी टीकम को अपने साथ खेत पर ले जाते। खेत जोतते समय बैलों को मार पड़ने से बालक टीकम रो पड़ता।

टीकम : ''पिताजी ! जैसे आपके सिर में दर्द होता है तब आपसे काम नहीं होता, ऐसे ही शायद आज बैलों के भी सिर में दर्द हो रहा होगा, तभी वे चल नहीं पा रहे हैं। उन्हें खोल के विश्राम करने दीजिये।''

बेटे की इस प्रकार की बातें सुनकर पिता के कानों में महात्मा की बात गूँजने लगती।

'कहीं बेटा साधु न हो जाय' - इसी चिंता-चिंता में माता-पिता संसार से चल बसे।

अब घर का सारा बोझ टीकम के बड़े भाई रेवती व उनकी धर्मपत्नी पर पड़ गया। रेवती की पत्नी बहुत महत्त्वाकांक्षी स्वभाव की थी, वह टीकम को हर समय काम में जोतती रहती। टीकम जो भाभी कहती सब करते पर करते अपने ढंग से थे। खेत जोतते तो थोड़ी-थोड़ी देर में बैलों को एक ओर खड़ा कर विश्राम करने देते व स्वयं फावड़े से खेत की गुड़ाई करने लगते।

खेत में पानी देते तो पहले चींटियों और कीड़े-मकोड़ों को बीनकर किसी ऊँचे स्थान पर रख देते । एक बार खेत में पानी देते समय उन्हें एक-दो जगह कीड़ों के बिल दिखे । उन्हें पानी से बचाने के लिए वे बिल के चारों ओर मिट्टी की मेंड़ बाँधने लगे । ऐसा करने में कुछ पौधे उखड़ गये और खेत का कुछ भाग सूखा ही रह गया । इतने में भाभी वहाँ आ गयी, उसने दाँत पीसते हुए कहा : ''महात्मा ! ये क्या कर रहे हो ? सिंचाई कर रहे हो कि कीड़े-मकोड़े पाल रहे हो ? ढोंगी कहीं के ! खाने को चाहिए मनभर, काम करने को नहीं रत्तीभर ! यही सब करना है तो ढोंगी साधुओं में जा मिलो ।''

टीकम ने आदरपूर्वक भाभी को प्रणाम किया और प्रभु की खोज में निकल पड़े । घूमते-घामते वे एक संन्यासी के आश्रम में जा पहुँचे और संन्यासी के निर्देशानुसार ध्यान-धारणा में लग गये । साधना में कुछ अनुभव हुआ किंतु आत्मतृप्ति न हुई । वे बेचैन रहने लगे ।

एक दिन टीकम को स्वप्न में एक महात्मा के दर्शन हुए । वे बोले : ''वत्स ! मैं तुम्हें पहले से जानता हूँ । तुम गर्भ में थे, तभी मैंने तुम्हारी माँ को तुम्हारे साधु होने की सूचना दे दी थी । तुम पिछले जन्म में ज्ञानी भक्त थे लेकिन ज्ञान के अभिमान के कारण तुम्हारे कुछ भोग शेष रह गये थे इसलिए तुम्हारा यह जन्म हुआ है । तुम पुष्कर चले जाओ और मेरे शिष्य परशुराम देव से दीक्षा ले लो ।''

जब तक शिष्य आत्मज्ञान न पा ले, तब तक सद्गुरु पीछा नहीं छोड़ते । कैसी है महापुरुषों की करुणा-कृपा !

पुष्कर पहुँचकर उन्होंने परशुराम देवाचार्यजी से अपनी शरण में रखने की प्रार्थना की । समर्थ गुरु से दीक्षा मिलने के बाद उनका अंतरात्मा का रस उभरा और वे लक्ष्य की ओर तीर की तरह चल पड़े । वे भगवान के भजन-चिंतन के सिवा न और कुछ करते और न उनके गुणगान के सिवा कुछ कहते-सुनते । यदि कोई कुछ और कहता तो कहते : ''भाई तत्त्व की बात कहो न ! तत्त्व का भजन छोड़ कुछ भी सार नहीं है ।'' इसीलिए उनका नाम तत्त्ववेत्ता पड़ गया ।
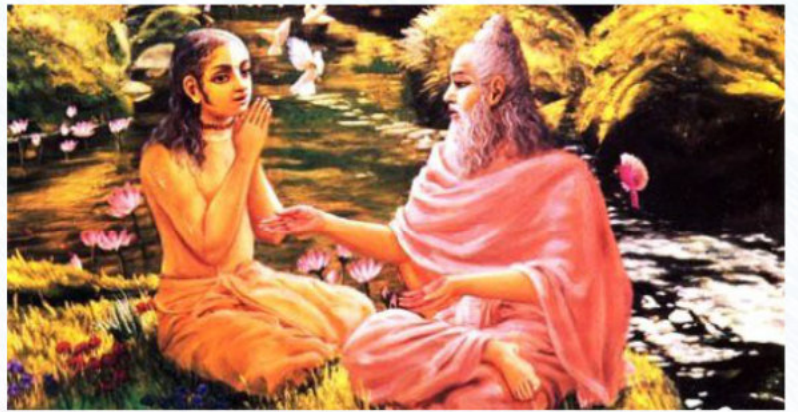
एक बार उनके संन्यासी गुरु की उनसे भेंट हो गयी । उन्होंने पूछा : ''बेटे ! तुम मेरे पास से क्यों चले आये ? कहाँ रह रहे हो ?''

उन्होंने परशुराम देवाचार्यजी से दीक्षा समेत सारा वृत्तांत कह सुनाया । संन्यासी नाराज हुए । जब टीकम जाने लगे, तब उन्होंने एक घड़ा जल से भरकर देते हुए कहा : ''इसे अपने नये गुरु को देना ।''

टीकम ने घड़ा लाकर परशुरामजी के सामने रखा और सारी बात कह सुनायी । परशुरामजी ने घड़े में बताशे डाल दिये और तत्त्ववेत्ताजी से कहा : ''अब इसे संन्यासीजी को दे आओ ।''

वे संन्यासी के पास पहुँचे और कहा : ''गुरुजी ने इसमें बताशे डालकर वापस भेजा है । आपका जैसा प्रश्न था, वैसा ही उत्तर है ।''

संन्यासी आश्चर्य में पड़ गये : ''बताओ, तुम क्या समझे ?''

तत्त्ववेत्ताचार्य : ''आपने पानी का घड़ा भेजकर गुरुजी की परीक्षा लेनी चाही थी कि वे अगर मेरे मनोभाव को समझ गये तो निश्चित ही उच्चकोटि के महात्मा होंगे । आपके कहने का आशय यह था कि 'मैंने तो टीकम के 'घट' को विशुद्ध ज्ञान से ऊपर तक भर दिया था । उसमें कसर क्या रह गयी थी जो आपने

उसे शिष्य बनाया ?' उन्होंने मीठे पानी का घड़ा भेजकर उत्तर दिया कि 'आपने जो ज्ञानोपदेश किया था, वह फीका और स्वादहीन था। मैंने उसको तीनों योगों की त्रिवेणी के सर्वोत्तम मधुर रस का पुट देकर उसे मधुरतम बना दिया।''

संन्यासी ने गद्गद होते हुए कहा : ''वत्स ! मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। धन्य हैं तुम्हारे गुरुदेव और धन्य हो तुम सामर्थ्यवान गुरु के सामर्थ्यवान शिष्य !''

*****

(पृष्ठ २५ से 'विज्ञान को अब समझ में आयी...' का शेष) नहीं। पाश्चात्य वैज्ञानिक ध्यान के स्थूल फायदे तो बता सकते हैं परंतु ध्यान का परम लाभ... सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम लाभ बताना ब्रह्मवेत्ताओं के लिए ही सम्भव है। ईश्वर का ध्यान हर समय कैसे बना रहे ? इसके बारे में पूज्य बापूजी बताते हैं : ''भ... ग... वा... न... जो भरण-पोषण करते हैं, गमनागमन (गमन-आगमन) की सत्ता देते हैं, वाणी का उद्गम-स्थान हैं, सब मिटने के बाद भी जो नहीं मिटते, वे भगवान मेरे आत्मदेव हैं। वे ही गोविंद हैं, वे ही गोपाल हैं, वे ही राधारमण हैं, वे ही सारे जगत के मूल सूत्रधार हैं - ऐसा सतत दृढ़ चिंतन करने से एवं उपनिषद् और वेदांत का ज्ञान समझ के आँखें बंद करने से शांति-आनंद, ध्यान में भी परमात्म-रस और हल्ले-गुल्ले में भी परमात्म-रस ! 'ट्यूबलाइट, बल्ब, पंखा, फ्रिज, गीजर - ये भिन्न-भिन्न हैं लेकिन सबमें सत्ता विद्युत की है, ऐसे ही सब भिन्न-भिन्न दिखते हुए भी एक अभिन्न तत्त्व से ही सब कुछ हो रहा है।' - ऐसा चिंतन-सुमिरन और प्रीतिपूर्वक ॐकार का गुंजन करें, एकटक गुरुजी को, ॐकार को देखें।''

गुरुदेव को कैसे बुलायें ?

आनंदमयी माँ से एक भक्त ने पूछा : ''किस अर्थ में गुरुदेव हमारे साथ हैं ?''

माँ बोलीं : ''यह बात अनेक अर्थों में बतायी जा सकती है। पहले इस विषय को अखंड भाव में देखो। गुरु विश्व-ब्रह्मांड के अणु-परमाणु में व्याप्त हैं। इस अर्थ में वे तुम्हारे साथ हैं। दूसरी ओर विचार करने पर देखा जाता है कि जगत में एक 'सत्' वस्तु है। वे ही गुरु हैं और वे ही शिष्य हैं। इस अर्थ से गुरु तुम्हारे साथ हैं। इसके अलावा गुरु मंत्ररूप में तुम्हारे साथ हैं। इसके बाद विषय को खंड रूप में देखने पर देखा जाता है कि योगीगण योग के जरिये एक ही समय अनेक जगह रह सकते हैं। शिष्य के मंगल के लिए गुरु योगशक्ति के जरिये खंड रूप में सभी शिष्यों के साथ सर्वदा रह सकते हैं। इस रूप में समझने पर बात सत्य है।''

(श्री आशारामायणजी की यह पंक्ति पूज्य बापूजी के करोड़ों साधकों का स्वानुभव है : 'सभी शिष्य रक्षा पाते हैं, सूक्ष्म शरीर गुरु आते हैं।')

एक वकील : ''गुरु की क्या आवश्यकता है ?''

माँ : ''तुम लोग बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षक क्यों रखते हो ? पढ़ने-लिखने के लिए जैसे शिक्षक की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार धार्मिक विषयों के लिए एक गुरु की जरूरत होती है।''

वकील : ''पुस्तकों में तो सब बातें लिखी हैं, फिर गुरु की आवश्यकता ?''

माँ : ''यह पुस्तक स्वयं पढ़ी नहीं जाती। बाहरी पुस्तकें पढ़ ली जाती हैं पर भीतर की पुस्तकें नहीं पढ़ी जातीं। गुरु उसे पढ़ा देते हैं बशर्ते गुरु अगर गुरु की तरह हों।''

वकील : ''सद्गुरु कैसे प्राप्त किये जा सकते हैं ?''

माँ : ''सद्गुरु की प्राप्ति के लिए विशुद्ध प्रयत्न की आवश्यकता होती है। प्रयत्न विशुद्ध होने पर सद्गुरु की प्राप्ति होती है। देखते होंगे कि 'जब बच्चे माँ-माँ कहते हुए जमीन पर लोटते-पोटते हैं, तब माँ स्थिर नहीं रह पाती। वह आने के लिए मजबूर हो जाती है। तुम लोग भी इसी प्रकार गुरु को बुलाओ। वे आने के लिए बाध्य हैं।''

विज्ञान को अब समझ में आयी ध्यान की महिमा
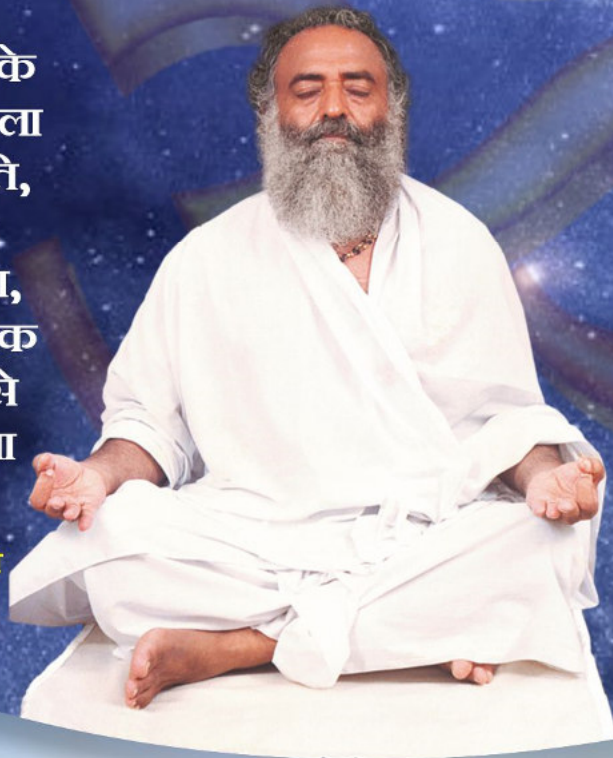
ध्यान सर्वोच्च मेधा, प्रज्ञा, दिव्यता तथा प्रतिभा रूपी अमूल्य सम्पत्ति को प्रकट करता है। मानसिक उत्तेजना, उद्वेग और तनाव की बड़े-में-बड़ी दवा ध्यान है। जो लोग नियमित रूप से ध्यान करते हैं, उन्हें दवाइयों पर अधिक धन खर्च नहीं करना पड़ता। भगवद्ध्यान से मन-मस्तिष्क में नवस्फूर्ति, नयी अनुभूतियाँ, नयी भावनाएँ, सही चिंतन-प्रणाली, नयी कार्यप्रणाली का संचार होता है। गुरु-निर्दिष्ट ध्यान से 'सब ईश्वर ही है' ऐसी परम दृष्टि की भी प्राप्ति होती है। ध्यान की साधना सूक्ष्म दृष्टिसम्पन्न, परम ज्ञानी भारत के ऋषि-मुनियों का अनुभूत प्रसाद है।

आज आधुनिक वैज्ञानिक संत-महापुरुषों की इस देन एवं इसमें छुपे रहस्यों के कुछ अंशों को जानकर चकित हो रहे हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार ध्यान के समय आने-जानेवाले श्वास पर ध्यान देना हमें न सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक विकारों से भी दूर रखता है। इससे तनाव व बेचैनी दूर होते हैं और रक्तचाप नियंत्रित होता है। पूज्य बापूजी द्वारा बतायी गयी श्वासोच्छ्वास की गिनती की साधना और ॐकार का प्लुत उच्चारण ऐसे अनेक असाधारण लाभ प्रदान करते हैं, साथ ही ईश्वरीय शांति एवं आनंद की अनुभूति कराते हैं, जो वैज्ञानिकों को भी पता नहीं है।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय में एक अध्ययन में पाया गया कि ध्यान के दौरान जब हम अपने हर एक श्वास पर ध्यान लगाते हैं तो इसके साथ ही हमारे मस्तिष्क के कॉर्टेक्स नामक हिस्से की मोटाई बढ़ने लगती है, जिससे सम्पूर्ण मस्तिष्क की तार्किक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। अच्छी नींद के बाद सुबह की ताजी हवा में गहरे श्वास लेने का अभ्यास दिमागी क्षमता को बढ़ाने का सबसे बढ़िया तरीका है। पूज्य बापूजी द्वारा

जीव को जब तक सहज अवस्था नहीं मिलती, तब तक उसका दुर्भाग्य दूर नहीं होता और गुरुकृपा बिना सहज अवस्था प्राप्त करना दुर्लभ है ।

बतायी गयी दिनचर्या में प्रातः ३ से ५ का समय इस हेतु सर्वोत्तम बताया गया है । कई शोधों से पता चला है कि जो लोग नियमित तौर पर ध्यान करते हैं, उनमें ध्यान न करनेवालों की अपेक्षा आत्मविश्वास का स्तर ज्यादा होता है । साथ ही उनमें ऊर्जा और संकल्पबल अधिक सक्रिय रहता है । येल विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्ता का कहना है कि 'ध्यान करनेवाले छात्रों का आई.क्यू. लेवल (बौद्धिक क्षमता) औरों से अधिक देखा गया है।'

चार अवस्थाएँ

ध्यान से प्राप्त शांति तथा आध्यात्मिक बल की सहायता से जीवन की जटिल-से-जटिल समस्याओं को भी बड़ी सरलता से सुलझाया जा सकता है और परमात्मा का साक्षात्कार भी किया जा सकता है । चार अवस्थाएँ होती हैं : घन सुषुप्ति (पत्थर आदि), क्षीण सुषुप्ति (पेड़-पौधे आदि), स्वप्नावस्था (मनुष्य, देव, गंधर्व आदि), जाग्रत अवस्था (जिसने अपने शुद्ध, बुद्ध, चैतन्य स्वभाव को जान लिया है)।

संत तुलसीदासजी ने कहा :

मोह निसाँ सबु सोवनिहारा ।
देखिअ सपन अनेक प्रकारा ।।

(श्री रामचरित. अयो.कां. : ९२.१)

'मैं सुखी हूँ, दुःखी हूँ' - यह सब सपना है । 'मैं' का वास्तविक स्वरूप जाना तब जाग्रत । इसलिए श्रुति भगवती कहती है :

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।...

(कठोपनिषद् : १.३.१४)
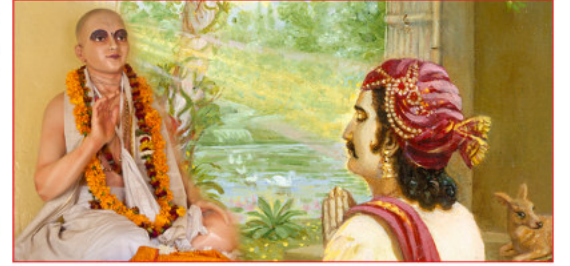
ध्यान माने क्या ?

पूज्य बापूजी बताते हैं : ''ध्यान माने क्या ? हमारा मन नेत्रों के द्वारा जगत में जाता है, सबको निहारता है तब जाग्रतावस्था होती है, 'हिता' नाम की नाड़ी में प्रवेश करता है तब स्वप्नावस्था होती है और जब हृदय में विश्रांति करता है तब सुषुप्तावस्था होती है । ध्यानावस्था न जाग्रतावस्था है, न स्वप्नावस्था है और न सुषुप्तावस्था है वरन् ध्यान चित्त की सूक्ष्म वृत्ति का नाम है । आधा घंटा परमात्मा के ध्यान में डूबने की कला सीख लो तो जो शांति, आत्मिक बल

ध्यान किसका करें और कैसे करें ?

प्राचीनकाल से आज तक असंख्य लोगों ने परमात्म-ध्यान का आश्रय लेकर जीवन को सुखी, स्वस्थ व समृद्ध तो बनाया ही, साथ ही परमात्मप्राप्ति तक की यात्रा करने में भी सहायता प्राप्त की । पूज्य बापूजी जैसे ईश्वर-अनुभवी, करुणासागर, निःस्वार्थ महापुरुष ही ईश्वर का पता सहज में हमें बता सकते हैं, हर किसीके बस की यह बात

(शेष पृष्ठ २३ पर)

गुरुकृपा है रक्षक और जीवन-परिवर्तक

- पूज्य बापूजी

स्वामी राम

एक घटना है स्वामी राम के जीवन की। एक तो हो गये स्वामी रामतीर्थ, जो टिहरी में रहते थे, जिन्होंने देश-परदेश में ब्रह्मज्ञान का डंका बजाया था। दूसरे हो गये स्वामी राम, जिनका देहरादून में अभी आश्रम है। उनके गुरु बड़े उच्च कोटि के संत थे। स्वामी राम को गुरु ने आज्ञा दी कि ''जाओ, दार्जिलिंग के श्मशान में ४१ दिन साधना करो। ४१वें दिन कुछ-न-कुछ हितकर घटना घटेगी।''

३९ दिन पूरे हुए। मन में तर्क-वितर्क आया कि '३९ और ४१ में क्या फर्क होता है!' घूमने में राग था, चल दिये। परंतु शिष्य को जिस दिन से ब्रह्मज्ञानी गुरु से दीक्षा मिल जाती है, उस दिन से गुरुकृपा हर क्षण उसके साथ होती है। गुरु उसकी निगरानी रखते हैं, उत्थान कराते हैं, गिरावट से बचाते हैं, खतरों से चेताते हैं और हर परिस्थिति में उसकी रक्षा करते हैं। संसार की झंझटों से तो क्या, जन्म-मरण से भी मुक्ति दिला देते हैं। शर्त केवल इतनी है कि शिष्य गुरु में दोषदर्शन, गुरु से गद्दारी करनेवाला न हो।

स्वामी राम श्मशान से निकलकर आगे पहुँचे तो एक नर्तकी गीत गाये जा रही थी। तबले के बोल बजते थे : 'धिक्-धिक्', मानो कह रहे थे कि 'तुझे धिक्कार है! यह तुमने क्या किया ?' वह फिर-फिर से दोहरा रही थी :

जीवनरूपी दीप में तेल बहुत थोड़ा है,
जबकि रात्रि बहुत लम्बी है।

नर्तकी को पता ही नहीं था कि मैं साधु के लिए गा रही हूँ लेकिन उसके गीत ने स्वामी राम को प्रेरणा देकर फिर से साधना में लगा दिया।

स्वामी राम ३९ दिन पूरे करके आधे में साधना छोड़ के जा रहे थे, वहीं खड़े हो गये। फिर श्मशान में वापस लौटे। ४०वाँ दिन पूरा हुआ, ४१वें दिन गुरु के कथनानुसार दिव्य स्फुरणाएँ और दिव्य अनुभव हुए।

स्वामी राम अपने को धनभागी मानते हुए ४१वाँ दिन पूरा करके उस वेश्या के द्वार पर आ रहे थे तो वेश्या के कमरे से आवाज आयी कि ''वहीं रुक जाओ। यह स्थान तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है।'' फिर भी स्वामी राम आगे बढ़े।

फिर से आवाज आयी : ''हे साधु महाराज! यहाँ मत आइये, वापस जाइये।'' फिर भी वे चलते गये। उसने अपने नौकर को रोकने के लिए आदेश दिया। बड़ी कद्दावर मूँछोंवाला नौकर आया, उसने भी कहा : ''युवक स्वामी! हमारी सेठानी मना कर रही हैं कि यह स्थान तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है, फिर आप क्यों आते हो ?''

स्वामी राम बोले : ''सेठानी को कह दो कि इस माता ने अपने संगीत के द्वारा मेरे जीवन की राह रोशन की है। लोगों की नजर से वह नर्तकी, वेश्या, ऐसी-वैसी दिखे लेकिन मैं तो उसे एक फिसलते हुए साधु को मार्गदर्शन देनेवाली माता मानता हूँ। मैं उसको प्रणाम करना चाहता हूँ। माँ के चरणों में जाना किसी बालक के लिए मना नहीं हो सकता। मैं कृतघ्न न बनूँ इसलिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने जा रहा हूँ।''
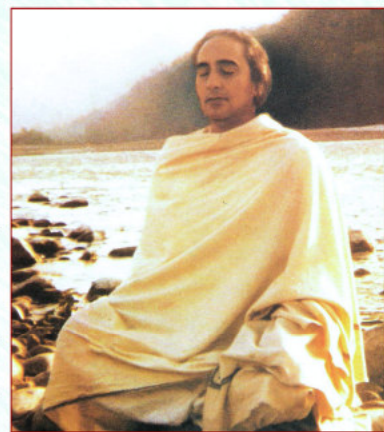
अंदर से नौकर के लिए आवाज आयी : ''इनको आने दीजिये, रोकिये मत।''

स्वामी राम ने उस वेश्या को प्रणाम किया, बोले : ''माँ ! मैं साधना अधूरी छोड़ के जा रहा था, गुरु के वचन को मोड़-तोड़ के मनमाना जामा पहना रहा था लेकिन तुम्हारे गीत ने मुझे प्रकाश दिया है। न जाने तुम्हारे गीत कितनों-कितनों को प्रकाश दे सकते हैं ! तुम अपने को हीन-दीन क्यों मानती हो ? तुम एक साधु की ही माँ नहीं, हजारों साधकों और हजारों साधुओं की भी माँ बन सकती हो, तुममें ऐसी योग्यता है ! तुम्हारे गीत कितने सुंदर, सारगर्भित हैं !''

वेश्या की आँखों में चमक आ गयी : ''वास्तव में मैं तुम्हारे जैसे संत की माँ और हजारों की माँ बनने के योग्य हूँ तो आज से मैं वही करूँगी। मैं अपने राग को भगवान के राग में बदलती हूँ। महाराज ! आपने मेरी आँखें खोल दीं।''

उस वेश्या ने अपनी कोठी और साज-सामान लुटा दिये। काशी में जाकर गंगाजी में एक नाव में रहने लगी और साध्वी की दीक्षा ले ली। नाव में वह भगवान के गीत गाती। इतने मधुर गीत गाती कि गंगा किनारे आये हुए लोग उसको चारों तरफ से घेर लेते। उसने अपनी नाव पर लिख रखा था कि 'भूलकर भी मुझे साधु मत मानिये। मैं एक वेश्या थी। एक संत की सच्ची बात ने मुझे काशी की पवित्र रज तक पहुँचा दिया है। कृपया ईश्वर के सिवाय कोई बात न करिये और मुझे प्रणाम करने की गलती न करिये।' कीर्तन-भजन करती और थोड़ी देर चुप होती। फिर कीर्तन-भजन करती और चुप होती, तो जो राग संसार में था वह भगवान में होता गया, वह शांति पाती गयी। जो द्वेष था वह भी कीर्तन-भजन से शांत हुआ। कुछ ही समय में वह वेश्या अंतरात्मा की ऊँची यात्रा में पहुँच गयी और उसने घोषणा की कि ''कल प्रातःकाल मैं यह चोला छोड़कर अपने प्रेमास्पद परमात्मा की गोद में जाऊँगी। मेरे शरीर की कोई समाधि न बनाये और संत की नाईं मेरे शरीर की कोई शोभायात्रा आदि न करे। मेरे शरीर को गंगाजी में प्रवाहित कर दें ताकि मछलियाँ आदि इसका उपयोग कर लें।''

दूसरे दिन प्रातःकाल भगवच्चिंतन करते हुए, जैसे योग की पराकाष्ठा पर स्थित योगी योगनिद्रा में समाहित होते हैं, ऐसे ही वह 'हे भगवान ! हे प्रभु ! आनंद ॐ...' करते हुए शांत हो गयी और शरीर छोड़ दिया।

उस वेश्या को पता ही नहीं था कि 'मैं इस साधु के लिए गा रही हूँ' लेकिन स्वामी राम ने अपना अनुभव सुनाया। वेश्या का हृदय उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम से भर गया। उसने अपनी दिव्यता को पहचाना, साधना में लग गयी, उत्तम साधकों की तरह शरीर त्यागा। यदि उसे ब्रह्मलोक की इच्छा होगी तो वहाँ समय बिताकर परम सुख की प्राप्ति के लिए - शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते। योगभ्रष्ट आत्मा उत्तम, पवित्र कुल में जन्म लेकर आत्मध्यान, सत्संग, सेवा-सान्निध्य पाकर जीवन्मुक्त हो जाता है। उसे लोक-लोकांतर में, जन्म-जन्मांतर में भटकना नहीं पड़ता। उसका तीव्र विवेक-वैराग्य बना रहा तो आत्मसाक्षात्कार भी कर लेगा।

गुरु शिष्य के कल्याण के लिए सब कुछ करते हैं। उनके अंदर निरंतर अदम्य स्नेह की धारा बहती रहती है। सत्शिष्य वही है जो गुरु के आदेश के मुताबिक चले। अतः गुरु के वचनों में कभी भी शंका नहीं करनी चाहिए। उनके वचनों में कोई अंतर्विरोध नहीं है। गुरुकृपा से सत्शिष्य एक दिन अपने अमरत्व का अनुभव कर लेता है और स्वामी राम की तरह वह स्वयं गुरु-पद पर आरूढ़ हो जाता है। और उस सत्शिष्य के सान्निध्य में आनेवालों का भी कल्याण हो जाता है।

(गुरु के चिंतन, सुमिरन तथा सान्निध्य से शिष्य के जीवन में आनेवाले आध्यात्मिक उन्नति के १७ लक्षणों में से गतांक का शेष)

(११) गुरुमूर्ति से गुरु निकल आयें, बातचीत की गुरु के साथ। इष्टमूर्ति से श्रीकृष्ण आ गये, रामजी आ गये, देवी माता आ गयीं फिर मूर्ति में समा गये, ऐसे चमत्कार भी होते हैं। परंतु सबको हों - यह जरूरी नहीं है लेकिन तीव्र भक्तिमार्गी के साथ हो सकता है।

(१२) आप जिसके बारे में विचार करोगे कि 'यह आदमी कैसे मिले ?' बस, फिर छोड़ दिया तो वह व्यक्ति आपके पास देर-सवेर हाजिर हो जायेगा, चाहे कितना भी बड़ा व्यक्ति हो !

मैं डीसा (गुज.) में जब एकांत में रहता था, तब की बात है। अपने आश्रम में शिवलाल काका (अभी उनकी उम्र ९२ साल की है) रहते हैं। उनके होटल के सामने एक मुसलमान बाई गाउन पहन के पागलों की नाईं पड़ी रहती थी।

शिवलाल काका का दोस्त टेकचंद मेरे पास आया। रात को डेढ़ बजे वह घर जा रहा था तो उस बाई ने उसको बुलाया : ''ऐ इधर आ ! फकीर के यहाँ से खजाना लूट के ले जा रहा है।'' हमारे उसके बीच की बात उसने थोड़ी-बहुत कह दी। सुबह टेकू ने मुझे सारी बात बतायी। मेरे को लगा कि 'यह बाई कोई सिद्ध आत्मा है, अब मैं शहर में जाऊँगा तो भीड़ हो जायेगी। क्या करें ?' आधा घंटा भी नहीं गुजरा होगा, वह भागा-भागा आया कि ''वह बाई अपने आश्रम के पास में नीम के पेड़ के पास आकर बैठ गयी है।'' मैं उससे मिलने गया तो मेरी ओर देखकर खूब हँसी और मेरे जीवन संबंधी भी कुछ बातें कह डालीं।

तो साधन-दशा में आपके अंतःकरण की स्थिति ऐसी हो जाती है।

(१३) आपकी जो आवश्यकता है, इच्छित वस्तु है उस वस्तु की आवश्यकता महसूस हो उसके पहले बिना प्रयत्न के वह आपके पास आ जायेगी। ऐसा तो कई बार होता है। लेकिन आत्मज्ञान,

आत्मसाक्षात्कार के आगे ये बहुत छोटी बातें हैं।

(१४) प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास करते हैं तो आपके शरीर में सत्त्वगुण बढ़ जाता है और हल्का-फुल्कापन महसूस होता है।

(१५) आपकी वाणी में मधुरता व प्रभाव आ जायेगा, मन शांत हो जायेगा और दीप्ति शक्ति जागृत रहेगी। रुपये लेकर दुनियाभर की मीठी भाषा, अलंकारिक भाषा बोलनेवाले लोग तो हैं, वैसी दीप्ति नहीं; उस गुरुनिष्ठ साधक का बोलना हजारों-लाखों लोगों के लिए राह रोशन करता है। ये ध्यान से ऊँचाइयाँ आ जाती हैं, जो दुनियाभर की पदवियों या प्रमाणपत्रों से नहीं हो सकता।

(१६) बिना चाहे भविष्य की घटनाएँ आपको मालूम होने लगेंगी। जैसे मेरे गुरुजी को सेवक ने समाचार पत्र पढ़कर सुनाया कि 'अमेरिकी अवकाशयात्री चन्द्रलोक तक पहुँच गये हैं। वहाँ जीवन की सम्भावना है और अब एकाध वर्ष में वहाँ होटल बनेगा।' तो गुरुजी ने नहीं चाहा था कि 'यह मेरे से पूछे और मैं जाँचूँ।' नहीं, जरा-सा चुप हो गये, फिर बोले : "नहीं बनेगा, रख दे।" यह सन् १९६९ की बात है। अमेरिका ने अभी तक चन्द्रलोक में होटल नहीं बनाया और नहीं बनेगा, सम्भव नहीं है।

(१७) जो आपको देखेगा, आपसे मिलेगा वह आकर्षित होगा, आह्लादित होगा। आपके अंतरात्मा का ऐसा प्रभाव निखरेगा कि उनको लगेगा, 'आपको देखते रहें बस, अच्छा लगता है।' आत्मा की ऐसी शक्तियों का विकास होता है।

आत्मवेत्ता गुरु अथवा ईश्वर में प्रीति करनेवाले का जीवन इन १७ लाभों तक ही सीमित नहीं रहता। जो भी इधर चलता है उसे अद्भुत आनंद आता है, अद्भुत अनुभूतियाँ प्राप्त होती हैं। इन १७ में से मेरे साधकों को तो कई अनुभूतियाँ होती हैं। किसीको २, ३... किसीको ४, ५, ७, ९... ऐसे तो बहुत लोग हैं लेकिन इन सारी अनुभूतियों के बाद भी आत्मसाक्षात्कार की भूमिका और आगे की है। वहाँ क्या होता है, वह वाणी में नहीं आता।

मूर्ति में तो श्रद्धा टिक जाती है लेकिन हयात महापुरुष में श्रद्धा टिकना ऐरे-गैरे का काम नहीं है।

गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मङ्गलम्।

मंगल तो देवता भी कर लेते हैं। लेकिन हनुमान-उपासना में संत तुलसीदासजी ने बहुत साफ-सुथरा रास्ता दिखा दिया :

जै जै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥

गुरुदेव हमारा जितना भला जानते और कर सकते हैं, उतना हमारी खोपड़ी सोच भी नहीं सकती। मैं सोच भी नहीं सकता था कि मेरा इतना भला हो सकता है, मैं ऐसा दिव्य लाभ, दिव्य अनुभव कर सकता हूँ, यह पता ही नहीं था, सोच भी नहीं सकता था। गुरुकृपा हि केवलं...

अमृत-बिंदु

वैकुंठ क्या है ? अकुंठित मति ही वैकुंठ है। सर्प क्या है ? संसार ही सर्प है। क्षीरसागर क्या है ? आपका अंतःकरण क्षीरसागर है लेकिन अनजान लोग समझते हैं कि भगवान सर्प पर लेटे हैं क्षीरसागर में। अंतःकरण की आपाधापी छोड़कर आत्मविश्रांति पाना यह क्षीरसागर में लेटना है।

- पूज्य बापूजी

पिछले अंक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर : (१) आत्मवेत्ता (२) अभिमान (३) भगवान का भजन

आत्मज्ञान से सराबोर पूज्य बापूजी के पत्र

(गतांक से आगे)

हरिद्वार
दिनांक : २५-११-१९७४

श्री श्री लालजी महाराज,
मोटी कोरल (बड़ौदा के निकट)

श्री लालजी महाराज के स्वरूप में विराजमान मेरे आत्मदेव !

हरिद्वार में २० दिन से रुका हूँ। यहाँ ठंडी का जोर ज्यादा है । कई भाइयों को कंतान-कम्बल आदि प्रिय लगता है, मानो परिक्रमावासी न हों । ईश्वर की लीला निराली है।

एक ब्रह्मनिष्ठ संत (श्री घाटवाले बाबा) के साथ आपके जैसी मैत्री हो गयी है । उनका स्नेह झेलने में जो आनंद आता है, उसका वर्णन करने में तो शेषनाग भी थक जायें। वैसे ही ताजपुरावाले श्री नारायण बापू की भी पवित्र मैत्री का लाभ यहाँ १५ दिन मिला।

अब फिर कहाँ ? जहाँ राम ले जाये वहाँ !

– आशाराम

*****

मोटेरा आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद
दिनांक : १७-५-१९७५

परम पूज्य श्री श्री लालजी महाराज,
मोटी कोरल (बड़ौदा के निकट)

आपके निजस्वरूप आशाराम के प्रणाम ! १५ दिन आबू, ३ दिन डीसा, २ दिन पालनपुर तथा सिद्धपुर में रुकते हुए १० दिन हुए हैं। सच पूछो तो मेरे आत्मदेव ! कोई भी गया नहीं है, न आया, न रुका, न हँसा, न खिसका... एक श्रीरामस्वरूप निजानंद में मस्त है । मनुष्य की जीवबुद्धि से सब कल्पित होता है। इससे तो संत निवृत्त हैं और वे जब स्वरूप का भान करायें तभी जीवन जीने की कला समझ में आती है।

ॐ... ॐ... मेरे प्यारे ! पत्र लिखने में शीघ्रता कीजियेगा । हरे हरे ! ॐ... ॐ... ॐ... बहुत याद आती है प्यारे !

– आशाराम

******

नलगुफा, माउंट आबू
दिनांक : २०-६-१९७५

श्रीराम जय राम जय जय राम
परम पूज्य लालजी महाराज,
मोटी कोरल (बड़ौदा के निकट)
जय श्रीराम राम ।

पत्र लिखने में विचार करना पड़ता है कि महँगे मेहमान को क्या लिखूँ और क्या न लिखूँ।

कुबेर (पंचकुबेरेश्वर महादेव, मोटी कोरल) की कुटीर में १२-१२ वर्ष का समय बीत गया (यह लालजी महाराज के लिए लिखा है) किंतु पैर हटाने की इच्छा ही नहीं होती । वाह-रे-वाह ! हिमालय के बाप ! हिमालय भी थोड़ा-बहुत परिवर्तन करते हैं, जहाँ चलना मुश्किल था वहाँ मोटरें दौड़ रही हैं। असंख्य यात्रियों को अपनी गोद में छुपा लेते हैं । बर्फ के टुकड़े देते हैं, साथ में अपना कोई स्मृतिचिह्न देकर हर वर्ष बहुत हेराफेरी करते हैं । वहीं हमारे लाला काका बस, कोरल की कुटी, कुटी, कुटीर

और अधिक हुआ तो ॐ ॐ की ध्वनि... वाह-रे-वाह !

दिनांक १५-५-७५ के दिन हरिद्वार गये। वहाँ दिव्य पुरुष घाटवाले बाबा के साथ सत्संग और सम्भाषण, अलौकिक विनोद, अद्भुत आत्मचर्चा में कुछ दिन बिताकर फिर हम आबू आये।

– आपका आशाराम

विपरीतकरणी मुद्रा

इस आसन के नियमित व विधिवत् अभ्यास से प्राणों के प्रवाह में सूक्ष्म परिवर्तन आता है। मणिपुर चक्र से प्राणशक्ति का प्रवाह प्रचुर मात्रा में विशुद्धाख्य चक्र की ओर होता है। इस प्रकार समस्त सूक्ष्म शरीर के शुद्धीकरण में सहायता मिलती है। इसका नियमित अभ्यास कई बीमारियों को रोकता है। यह ओजशक्ति को ऊपर के केन्द्रों में ले जाने की एक महत्त्वपूर्ण मुद्रा है। महर्षि घेरंड के अुसार जो नित्यप्रति इसकी साधना करता है, वह बुढ़ापे पर विजय प्राप्त करता है। इसके अभ्यास से प्रायः सर्वांगासन व शीर्षासन से होनेवाले सभी लाभ होते हैं।

लाभ : (१) गले को तथा उसके ऊपर के अंगों को अधिक मात्रा में शुद्ध रक्त की प्राप्ति होती है।

(२) मस्तिष्क में विशेषकर प्रमस्तिष्क आवरण (सेरेब्रल कॉर्टेक्स) तथा पीयूष (पिट्यूटरी) ग्रंथि एवं शीर्ष (पीनियल) ग्रंथि में रक्त का संचार बढ़ जाता है। प्रमस्तिष्क की अक्षमता तथा बुढ़ापे के कारण होनेवाला मनोभ्रंश प्रभावहीन होते हैं तथा मानसिक सतर्कता बढ़ती है।

(३) स्नायविक दुर्बलता दूर होती है।

(४) सफेद बाल काले होने लगते हैं और चेहरे की झुर्रियाँ दूर होकर नवयौवन प्राप्त होता है।

(५) अल्पक्रियाशील थायरॉइड संतुलित बनती है तथा सर्दी-जुकाम, गले की सूजन व श्वसन-संबंधी रोगों से बचाव होता है।

(६) भूख व पाचन-क्रिया बढ़ती है तथा कब्ज के उपचार में मदद मिलती है।

(७) यह बवासीर एवं हर्निया के उपचार में सहायक है।

(८) महिलाओं का बाँझपन और मासिक धर्म संबंधी विकार दूर होते हैं।

विधि : जमीन पर कम्बल बिछाकर शवासन में लेट जायें। दोनों पैरों को एक साथ धीरे-धीरे ऊपर उठायें। कमर को हथेलियों से सहारा देकर ऊपर उठायें। गर्दन से कमर तक का भाग जमीन से ४५ डिग्री पर ऊपर रखें तथा पैरों को सीधा रखते हुए सिर की ओर उतना ही झुकायें जिससे पैर दृष्टि की सीध में आ जायें। जीभ से तालू का स्पर्श करें। पैर के अँगूठों पर दृष्टि एकाग्र करें अथवा ध्यान मणिपुर (नाभि) केन्द्र में रखें।

आरम्भिक स्थिति में लौटने के लिए पैरों को सिर की ओर झुकायें, फिर धीरे-धीरे मेरुदंड को नीचे लायें तथा घुटने मोड़े बिना धीरे-धीरे पैरों को नीचे लायें। कुछ देर शवासन में लेटे रहें।

विपरीतकरणी मुद्रा का अभ्यास प्रतिदिन एक ही समय पर प्रातःकाल करना लाभप्रद है। प्रथम दिन कुछ सेकंड तक अभ्यास करें। धीरे-धीरे अवधि बढ़ाते हुए १०-१५ मिनट तक कर सकते हैं। अपने नित्य योगाभ्यास के अंत में तथा ध्यान के पूर्व इसका अभ्यास करें।

सावधानियाँ : भोजन के कम-से-कम तीन घंटे बाद तक इसका अभ्यास न करें। उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, थायरॉइड अभिवृद्धि या शरीर में विषाक्त तत्त्वों की वृद्धि होने पर यह आसन न करें। गर्भवती महिलाओं व १४ वर्ष से कम आयु के बालकों को यह आसन नहीं करना चाहिए।

कैसे बनें विद्यार्थी मेधावी व महान ?

- पूज्य बापूजी

बच्चों में ज्ञानशक्ति की वृद्धि नहीं होगी तो खड़े-खड़े पानी पियेंगे, खड़े-खड़े खाना खायेंगे। इससे और अधिक बुद्धिनाश होता है। जो लड़कियाँ लड़कों से और लड़के लड़कियों से दोस्ती करते हैं, उनकी बुद्धिशक्ति, प्राणशक्ति दब्बू बन जाती है तथा स्वास्थ्य व बुद्धि की हानि होती है।

ज्ञानशक्ति विकसित करनी हो तो बुद्धि में दुराग्रह छोड़ो। बुद्धि में समत्व हो, शास्त्रसंबंधी विवेक हो और दुराग्रह न हो, भगवान के प्रति प्रीति का आग्रह हो। रात को सोते समय बुद्धि बुद्धिदाता में विश्रांति पाये, 'मैं परमात्मा में आराम कर रहा हूँ, ॐॐ प्रभुजी ॐ...' सचेतन मन, अचेतन मन दोनों में यह ॐकार का सुमिरन करते-करते सो जाओगे तो बुद्धिशक्ति तो बढ़ेगी, बढ़ेगी... अनुमान शक्ति, क्षमाशक्ति भी बढ़ेगी।

ज्ञान की वृद्धि में सहायक आठ बातें

विद्या-अध्ययन के समय आठ बातें ज्ञान की वृद्धि में सहायक हैं। पहली बात है, शांत रहना। इसके लिए ओऽऽ...म्ऽऽ... का १०-१५ मिनट प्लुत गुंजन करने का अभ्यास करो। शांत रहने से तुम्हारे में मननशक्ति, चिंतनशक्ति विकसित होगी।

दूसरी बात है, इन्द्रियों का संयम। जो देखा, बस लपक पड़े, जो आया खा लिया, खड़े-खड़े खा लिया - पानी पी लिया, खड़े-खड़े पेशाब कर लिया... यह जरा-जरा-सी गलती पशुत्व, आसुरीपना ले आती है। इससे मति-गति तामसी हो जाती है।

तीसरी बात है, बच्चे दुःखदायी दोषों से बचे रहें। दुःखदायी दोष हैं - गंदी फिल्म देखना, गंदी सोहबत (संग) में आना, गंदे कर्म करना।

चौथी बात है, सदाचरण करे।

पाँचवीं बात, ब्रह्मचर्य का पालन करे। (आश्रम की दिव्य प्रेरणा प्रकाश पुस्तक पढ़ने से सफल होंगे।)

छठी बात, आसक्ति न रखे।

सातवीं बात, सत्य बोले।

आठवीं बात है, सहनशक्ति बढ़ावे। माँ ने कुछ कह दिया तो कोई बात नहीं, माँ है न ! पिता ने या शिक्षक ने कुछ कह दिया तो रूठना नहीं चाहिए, मुँह सुजाना नहीं चाहिए।

बाल्यकाल में किससे सावधान रहना चाहिए ?

दुष्टों के संग से, स्वार्थियों की अक्ल और होशियारी से, मूर्खों से। अदूरदर्शन, थोड़ी-सी चोरी, थोड़ा-सा आलस्य, थोड़ा-सा ऐसा-वैसा स्वभाव, थोड़ा-सा यह चलेगा, जरा यह चलेगा, चल जायेगा-चल जायेगा - ऐसा करते-करते अपने सद्गुण छोड़ते जाते हैं और 'दुर्गुण चल जायेगा' - ऐसा सोचते हैं तो इससे वह महादुर्गुणी हो जाता है।

पाँच सावधानियाँ हैं :

(१) अभिमान न करे। पढ़ाई में, कबड्डी में, खेल में जीत गये तो अभिमान न आये।

(२) किसी पर क्रोध न करे।

(३) 'पाठ बाद में याद कर लेंगे' - इस प्रकार का प्रमाद न करे। इससे भी बच्चों का विकास होगा।

(४) संयम रखे। बुरी नजर से लड़की लड़के को देखे, लड़का लड़की को देखे... इससे जीवनीशक्ति नाश होती है।

(५) आलस्य न करे।

यह भी विद्यार्थी-जीवन में बहुत नुकसान करता है। जिस समय जो काम करना है, तत्परता से करो। लापरवाही से काम को बिगाड़ें नहीं तो अच्छे विद्यार्थी बनेंगे।

बुद्धि के कितने नाम होते हैं ?

मनीषा, धिषणा, धीः, प्रज्ञा, शेमुषी, मति - ये सारे नाम बुद्धि के हैं। इनका अलग-अलग प्रभाव होता है। उचित-अनुचित का निर्णय करना यह मति का काम है। धृति और बुद्धि दोनों इकट्ठी हो तो उसे बोलते हैं 'मेधा'।

मेधावी का क्या अर्थ है ?

जिसमें अनुचित को छोड़ने का सामर्थ्य और उचित में डटे रहने का सामर्थ्य होता है, उसको 'मेधावी' बोलते हैं। अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण के विराट रूप का दर्शन करते हैं लेकिन उनका दुःख, भय नहीं गया लेकिन जब अर्जुन को सत्संग में रुचि हुई, तब उनकी बुद्धि मेधावी बनी।

मेधावी छिन्नसंशयः ।

संशय का छेदन कर दिया। अर्जुन मेधावी बन गये, तब बोलते हैं :

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।

स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥

विद्यार्थी-जीवन में और व्यावहारिक जीवन में अपनी बुद्धि ठीक होनी चाहिए, मेधावी बनना चाहिए।

****

****

'ऋषि प्रसाद' सेवादारों की सेवा सराहनीय है

- पूज्य बापूजी

ऋषि प्रसाद २५ वर्ष रजत जयंती वर्ष २०१५-१६

ऋषि प्रसाद जयंती
३१ जुलाई

कर्मों के जाल में बाँधे वह कुसंग और कर्म को योग बना दे वह सत्संग।
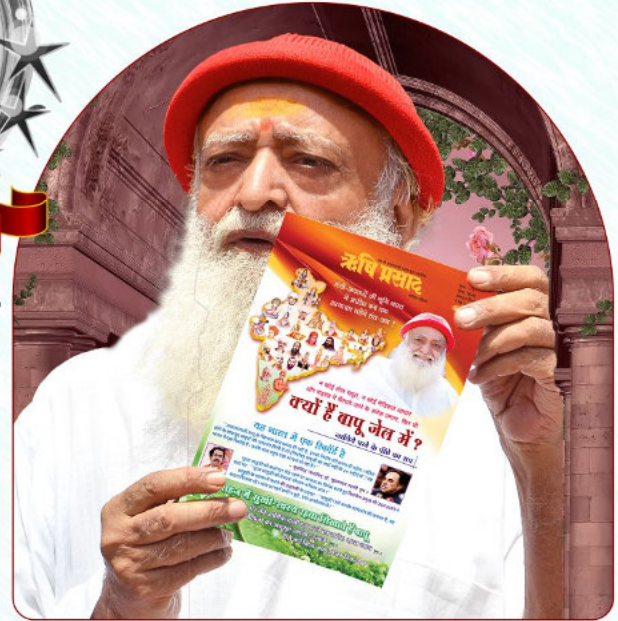
'ऋषि प्रसाद' के सेवाधारियों की सेवा सराहनीय है। जो भी सेवाधारी ऋषि प्रसाद की सेवा करते हैं, उनकी जगह पर अगर वेतनभोगी रखें तो वे इतने प्रेम से सेवा नहीं करेंगे और उन्हें वह आनंद नहीं आयेगा जो सेवाधारियों को आता है। क्योंकि उनकी नजर रुपयों पर होगी और सेवाधारियों की नजर है गुरु-प्रसाद पर। हमारा लक्ष्य तो

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।

भोगी लोग आखिर नरकों में जाते हैं और ऋषि प्रसाद के सेवाधारी ज्ञान दे रहे हैं तो ज्ञानयोगी बन जायेंगे। और ज्ञानयोगी जहाँ जायेगा वहाँ नरक भी स्वर्ग हो जाता है। श्वास स्वाभाविक चल रहा है, उसमें ज्ञान का योग कर दो 'सोऽहम्'।

जो भी सेवाधारी कोई सेवा करते हैं तो वे अपना कल्याण करने के लिए कर रहे हैं। भोग-वासना को मिटाने के लिए कर्मयोग कर रहे हैं। यह बात पक्की कर लो !

ऋषि प्रसाद के जो सेवाधारी हैं, उनकी सेवाओं से लाखों लोगों तक हाथों-हाथ 'ऋषि प्रसाद' पहुँचती है लेकिन हम उनको शाबाशी नहीं देंगे। वे जानते हैं कि 'बापूजी हमको नकली दुनिया से बचाते हैं, नकली शाबाशी से बचाते हैं और बापूजी ऐसी चीज देना चाहते हैं जो भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा ब्रह्मज्ञानियों के हृदय में लहराती है, स्फुरित होती है... वह खजाना देना चाहते हैं।'

ब्रह्मवेत्ता के सिवा अन्य लोगों का संग करोगे तो वे अपनी ही कल्पनाओं में, अपने ही रंग में आपके चित्त को रँगेंगे । ब्रह्मज्ञानी के संग के बिना जो भी संग हैं, वे संसार में घसीटनेवाले संग हैं । ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का संग ही सत्संग है, बाकी सब कुसंग है कुसंग ! कर्मों के जाल में बाँधे वह कुसंग और कर्म को योग बना दे वह सत्संग । सत्यस्वरूप परमात्मा से मिला देनेवाला कर्म सत्संग है और ईश्वर से मिलानेवाला, परमात्मा से मिलानेवाला संग ही सत्संग है । मुझे तो यह बात ऋषि प्रसाद वालों को पक्की करानी है कि

देखा अपने आपको मेरा दिल दीवाना हो गया ।
न छेड़ो मुझे यारों मैं खुद पे मस्ताना हो गया ।।

अब काम पर मस्ताना, लोभ पर मस्ताना, धन में मस्ताना तो कई लोग देख लिये । वाहवाही में मस्ताना कइयों को देखा । अरे, कोई निंदा भी करे तब भी वही शांति बनी रहे । कोई वाहवाही करे या निंदा करे तब भी क्या फर्क पड़ता है ! सुखद स्थिति आ जाय तो क्या हो गया, दुःखद स्थिति आये तो क्या हो गया ? समय तो पसार हो रहा है । समय सभीको निगल रहा है । काल को जो जानता है, उस अकाल 'सोऽहम्' स्वभाव को तू पहचान ले बस, हो गया काम !

सबसे बड़ा और अनोखा आशीर्वाद

'तुम्हारे सामने दुःख न आये, तुम सदा सुखी रहो' - यह आशीर्वाद हम नहीं देते हैं लेकिन 'तुम सुख और दुःख के भोक्ता न बनो, उनको साधन बना लो । सुख आये तो बहुजनहिताय और दुःख आये तो बहुत गयी थोड़ी रही... आया है सो जायेगा... संयम और सोऽहम्... दुःख का द्रष्टा दुःखी नहीं होता, सुख का द्रष्टा सुखी नहीं होता अपितु बाँटकर आनंदमय होता है ।

यह भी देख, वह भी देख ।
देखत देखत ऐसा देख कि
मिट जाय धोखा, रह जाय एक ।।

सोऽहम्... शिवोऽहम्... आनंदोऽहम्... । तुम अपने आत्मा को जानो,

जहाँ सुख-दुःख तुच्छ हो जायें तथा संसार स्वप्न हो जाय', बस ! इससे बड़ा आशीर्वाद तो कोई हो सकता है, यह मेरे को समझ में नहीं आता ।

'तुम भी निर्लेप रहो, बेटे-बेटियाँ भी निर्लेप रहें, संसार छूट जाय उसके पहले उसकी आसक्ति छोड़कर अपना आत्मयोग करो', बस ! मैं तो यह सलाह देता हूँ, यह शुभ भावना कर सकता हूँ ।

पाचन-संस्थान के रोगों का एक्यूप्रेशर द्वारा इलाज

दस्त या अतिसार में एक्यूप्रेशर चिकित्सा

चित्र १

दस्त के एक्यूप्रेशर बिंदु :

मुख्य बिंदु : ✲ नाभि के ठीक चार अंगुल नीचे स्थित बिंदु। (चित्र १ में बिंदु 'अ')

✲ छाती की बीचवाली हड्डी के नीचेवाले छोर और नाभि के ठीक बीच में स्थित बिंदु। (चित्र १ में बिंदु 'ब')
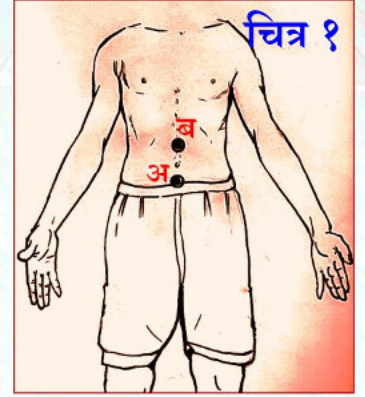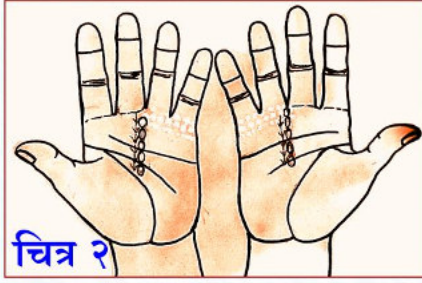
चित्र २

✲ दोनों हथेलियों में दूसरी और तीसरी उँगली के मध्य चित्र २ में दर्शाये गये भाग पर उँगलियों के जोड़ से हाथ की कलाई की ओर हथेली के ठीक मध्य तक रगड़ते हुए हलका दबाव दें। इस प्रकार एक हाथ में ५ से ७ बार करें। दबाव पेन, पेंसिल के पीछेवाले भाग या अँगूठे से दिया जा सकता है। एक्यूप्रेशर करने से पहले हथेली पर २-४ बूँद तेल या टेलकम पाउडर लगा लेने से एक्यूप्रेशर अच्छी तरह से होता है।

सहायक बिंदु : हाथों व पैरों के अँगूठे व प्रथम उँगली के बीचवाले मांसल भाग पर स्थित बिंदु।

चित्र ३

(चित्र ३ व जून माह की ऋषि प्रसाद के पृष्ठ ३० का चित्र १ भी देखें)

उक्त चित्रों में दर्शाये गये बिंदुओं पर ५ से १० सेकंड तक दबाव दें, फिर छोड़ दें, फिर दबाव दें। ऐसा २ से ३ मिनट तक दिन में ३ बार करें।

सीधे लेटकर दोनों पैरों के नीचे टखने के पास गरम पानी की थैली या काँच की बोतल में गरम पानी भरकर चित्र ४ में दर्शाये अनुसार १५ से २० मिनट के लिए रखें। इससे दस्त में जल्दी लाभ होता है और शरीर की थकान भी दूर होती है। यह प्राकृतिक चिकित्सा का अनुभूत प्रयोग है।

दस्त सामान्यतः अत्यधिक या अनुचित अथवा दूषित आहार तथा दूषित पानी के कारण होते हैं। दस्त होने पर पेडू पर गर्म पानी की थैली से ५-७ मिनट सेंक करें। भोजन में पतली खिचड़ी लें। दही के ऊपर का पानी २ चम्मच पीना लाभदायी है। दूध, फल या फलों का रस तथा पचने में भारी पदार्थ नहीं लेने चाहिए। कुटज घनवटी की ४-४ गोलियाँ दिन में ३-४ बार लेने से दस्त बंद हो जाते हैं।

चित्र ४

दस्त लगने पर प्राथमिक उपचार (पढ़ें पृष्ठ ३१ पर) तुरंत चालू करें। समय पर वैद्यकीय सलाह बहुत जरूरी है क्योंकि ज्यादा दस्त लगने पर बच्चों व वृद्धों की जान को खतरा हो सकता है।

वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य-सुरक्षा

(वर्षा ऋतु : २१ जून से २२ अगस्त)

वर्षा ऋतु का नमीयुक्त वातावरण जठराग्नि को मंद कर देता है। शरीर में पित्त का संचय व वायु का प्रकोप हो जाता है, जिससे वात-पित्त जनित व अजीर्णजन्य रोगों का प्रादुर्भाव होता है।

अपनी पाचनशक्ति के अनुकूल मात्रा में हलका सुपाच्य आहार लेना और शुद्ध पानी का उपयोग करना - इन २ बातों पर ध्यान देने मात्र से वर्षा ऋतु में अनेक बीमारियों से बचाव हो जाता है। शाम का भोजन ५ से ७ बजे के बीच कर लें। इससे भोजन का पाचन शीघ्र होता है।

इस ऋतु में शरीर की रक्षा करने का एक ही मूलमंत्र है कि पेट और शरीर को साफ रखा जाय अर्थात् पेट में अपच व कब्ज न हो और त्वचा साफ और स्वस्थ रखी जाय। आयुर्वेद के अनुसार कुपित मल अनेक प्रकार के रोगों को जन्म देता है। इससे गैस की तकलीफ, पेट फूलना, जोड़ों का दर्द, दमा, गठिया आदि की शिकायत हो जाती है। अशुद्ध और दूषित जल का सेवन करने से चर्मरोग, पीलिया, हैजा, अतिसार जैसे रोग हो जाते हैं।

बारिश में होनेवाली बीमारियाँ व उनका उपचार

(१) आँत की सूजन (gastroenteritis) : गंदे पानी तथा दूषित खाद्य पदार्थों के सेवन से यह रोग फैलता है। इसमें उलटी, पतले दस्त, बुखार, रसक्षय (शरीर में पानी की कमी) इत्यादि लक्षण उत्पन्न होते हैं।

प्राथमिक उपचार : सफाई का ध्यान रखें। भोजन में चावल का पानी (माँड़) तथा दही में समान भाग पानी मिला के मथकर बनाया हुआ मट्ठा लें। नमक व शक्कर मिलाया हुआ पानी बार-बार पियें, जिससे रसक्षय (डिहाइड्रेशन) न होने पाये। इसमें नींबू भी मिला सकते हैं। मूँग की दाल की खिचड़ी में देशी घी अच्छी मात्रा में डालकर खायें। अच्छी तरह उबाला हुआ पानी पियें। भोजन ताजा, सुपाच्य लें।

(२) दस्त (bacillary dysentery) : उपरोक्त अनुसार।

(३) दमा : वर्षा ऋतु में बादलों के छा जाने पर दमे के मरीजों को श्वास लेने में अत्यधिक पीड़ा होती है। उस समय २० मि.ली. तिल का तेल गर्म कर पियें। तिल या सरसों के गर्म तेल में थोड़ा-सा सेंधा नमक मिलाकर छाती व पीठ पर मालिश करें। फिर गर्म रेती की पोटली से सेंक करें।

(४) सर्दी, खाँसी, ज्वर : वर्षाजन्य सर्दी, खाँसी, जुकाम, ज्वर आदि में अदरक व तुलसी के रस में शहद मिलाकर लेने से व उपवास रखने से आराम मिलता है।

जठराग्नि को प्रदीप्त करने के उपाय

* भोजन में अदरक, हींग, अजवाइन, काली मिर्च, मेथी, राई, पुदीना आदि का विशेष उपयोग करें। तिल का तेल वात-रोगों का शमन करता है।
* भोजन में अदरक व नींबू का प्रयोग करें। नींबू वर्षाजन्य रोगों में बहुत लाभदायी है।
* १०० ग्राम हरड़ चूर्ण में १०-१५ ग्राम सेंधा नमक मिला के रख लें। दो-ढाई ग्राम रोज सुबह ताजे जल के साथ लेना हितकर है।
* हरड़ तथा सोंठ को समभाग मिलाकर ३-४ ग्राम मिश्रण ५ ग्राम गुड़ के साथ सेवन करने से जठराग्नि निरंतर प्रदीप्त रहती है।
* वर्षाजन्य व्याधियों से रक्षा व रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने हेतु गोमूत्र सर्वोपरि है। सूर्योदय से पूर्व २० से ३० मि.ली. ताजा गोमूत्र ८ बार महीन सूती वस्त्र से छानकर पीने से अथवा २० से २५ मि.ली. गोझरण अर्क पानी में मिलाकर पीने से शरीर के सभी अंगों की शुद्धि होकर ताजगी, स्फूर्ति व कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

सावधानियाँ : वर्षा ऋतु में पानी उबालकर पीना चाहिए या पानी में फिटकरी का टुकड़ा घुमायें, जिससे गंदगी नीचे बैठ जायेगी।

शाम को संध्या के समय घर में अँधेरा करने से मच्छर बाहर भाग जाते हैं। थोड़ा-बहुत धूप-धुआँ कर सकते हैं। और सुबह घर में अँधेरा होने से मच्छर अंदर घुसते हैं। उस समय उजाला करने से मच्छरों का प्रवेश रुकता है। गेंदे के फूलों के पौधे का गमला दिन में बाहर व संध्या को कमरे में रखें। गेंदे के फूलों की गंध से भी मच्छर भाग जाते हैं और मच्छरदानी आदि से भी मच्छरों से बचें, जैसे साधक अहंकार से बचता है।

इन दिनों में ज्यादा परिश्रम या व्यायाम नहीं करना चाहिए। दिन में सोना, बारिश में ज्यादा देर तक भीगना, रात को छत पर अथवा खुले आँगन में सोना, नदी में स्नान करना और गीले वस्त्र जल्दी न बदलना हानिकारक होता है।

समाज को आलोकित करते सेवाकार्य

जैसे शीतलता देना बर्फ का स्वभाव होता है, सुगंध देना पुष्प का, चाँदनी देना चाँद का और प्रकाश देना सूरज का स्वभाव होता है, ऐसे ही संतों का स्वभाव होता है लोगों को ज्ञान, आनंद, शांति, प्रेम, आश्रय देना। संत दूसरों का मंगल करते हैं, उनको हिम्मत, सांत्वना देते हैं, उनके अभावों की पूर्ति करते हैं, खिन्न जीवन में प्रसन्नता के पुष्प खिलाते हैं, उनके मुरझाये चेहरों पर सुकून ला देते हैं। बापूजी आज स्वयं कारागार में हैं फिर भी आज भी संतश्री के हृदय में लोक-मांगल्य की शीतल, मधुमयी गंगा हिलोरें लेती रहती है।

शरबत-वितरण

गर्मी से व्याकुल जनता-जनार्दन को तृप्ति पहुँचाने हेतु गर्मियोंभर से सतत चल रही शरबत आदि वितरण सेवा के अंतर्गत पटियाला, लुधियाना (पंजाब), पानीपत (हरि.), छतरपुर (म.प्र.), गाजियाबाद, करोलबाग-दिल्ली, कोटा (राज.), दहेगाँव जि. गाँधीनगर (गुज.), हाथरस (उ.प्र.), देहरादून (उत्तराखंड), यमुनानगर, रोहतक, भिवानी (हरि.), खड़गपुर (प. बंगाल), गड़चिरोली (महा.), दाता तालाब (जम्मू-कश्मीर) सहित सैकड़ों स्थानों पर शरबत-प्याउएँ लगायी गयीं।

बड़ौदा, भावनगर, जामनगर (गुज.), वनियामबाडी (तमिलनाडु), पटना में छाछ पिलाने की सेवा की गयी। अहमदाबाद में चलित शरबत प्याऊ द्वारा पूरे शहर में घूम-घूमकर शरबत पिलाया गया, साथ ही आँवला कैंडी का वितरण भी किया गया।

गरीबों में भंडारे व अनाज-वितरण

हरिद्वार में गंगा दशहरे के पावन अवसर पर सैकड़ों साधुओं के समूहों को भोजन कराया गया तथा उन्हें दक्षिणा व जीवनोपयोगी वस्तुएँ भेंटस्वरूप दी गयीं । हाथरस (उ.प्र.) में जरूरतमंदों को भोजन कराया गया तथा दक्षिणा, छाते एवं चप्पलों का वितरण किया गया । पटना में संकीर्तन यात्रा निकाली गयी तथा गरीबों में अनाज बाँटा गया । थर्मल (गुज.) में गरीबों में भंडारा व अनाज वितरण किया गया । श्रीपाली भाटेल जि. कालाहांडी (ओड़िशा) में गरीबों में जूते-चप्पल बाँटे गये । अलिराजपुर (म.प्र.) में कलशयात्रा निकाली गयी व गरीबों में भंडारा किया गया ।

विदेशों में भी भारतीय संस्कारों की माँग

देश-काल की सीमाओं से पार प्राणिमात्र का मंगल करनेवाले पूज्य बापूजी द्वारा दिये गये सुसंस्कारों से भारत की पीढ़ी तो आबाद हो ही रही है, साथ ही विदेश के लोग भी लालायित हैं अपने बच्चों में वे सद्गुण भरने के लिए । सेन जोस (कैलिफोर्निया) के एक स्कूल ने वहाँ की योग वेदांत सेवा समिति को साप्ताहिक योग और ध्यान वर्ग (बाल संस्कार) चलाने के लिए प्रशंसा-पत्र दिया । यहाँ पिछले ३ वर्षों से यह कार्यक्रम चल रहा है । यह कक्षा १ से ५ तक पहुँच गया है तथा और भी माँग बढ़ रही है ।

'ऋषि प्रसाद' सुप्रचार अभियान

निर्दोष पूज्य बापूजी की सच्चाई से अनभिज्ञ समाज तक सत्य का प्रकाश पहुँचाने हेतु सभी समितियों, बाल संस्कार केन्द्रों, युवा सेवा संघों, महिला उत्थान मंडलों एवं साधकों ने सच्चाई की खबर देनेवाली ऋषि प्रसाद - नयी खबर (पत्रिका) लोगों तक पहुँचायी । साधक गाँव-गाँव, शहर-शहर, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, दुकानों, घरों, मंदिरों, सार्वजनिक स्थानों पर जा-जाकर हिन्दू संगठनों तथा विशिष्ट व्यक्तियों से मिलकर सच्चाई को समाज में फैला रहे हैं ।

सिद्धपुर जि. हमीरपुर (हि.प्र.), बिलासपुर, धर्मशाला जि. कांगड़ा (हि.प्र.), चंडीगढ़, अम्बाला (हरि.), जम्मू, अम्बरनाथ (महा.) और अमृतसर (पंजाब) में 'ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन सम्मेलन' सम्पन्न हुए, साधकों ने सेवा का संकल्प लिया ।

जलगाँव और भुसावल (महा.) के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग १७ गाँवों में पूज्य बापूजी की आज्ञानुसार निःशुल्क होमियोपैथिक चिकित्सा शिविर लगाये गये । जलगाँव के कानलदा, रामेश्वर, वावडदा, नशिराबाद, जलके, रायपुर-कुसुम्बा, विटनेर, डोमगाँव और भुसावल के मस्कावद, कुंभारखेड़ा, रणगाँव, तासगाँव में हजारों मरीजों का इलाज किया गया तथा दवाइयाँ भी निःशुल्क दी गयीं।

****

कितना खयाल रखते हैं बापूजी !

मैं मैकेनिकल इंजीनियर हूँ और सिंगापुर की एक कम्पनी में काम करता हूँ। २००९ की बात है, कम्पनी में काम कम होने से कुछ लोगों को निकाला जा रहा था। अगले दिन निकाले जानेवालों की सूची लगनी थी। मेरा प्रोजेक्ट तो दो महीने से खत्म हो चुका था। मेरा नाम सूची में आने की पूरी सम्भावना थी। उसी रात मुझे बापूजी ने प्रेरणा दी कि 'विपत्ति-निवारण का मंत्र जप।' मैं तुरंत जप करने बैठ गया। मैंने हृदयपूर्वक प्रार्थना की : 'बापूजी ! अगर मेरी नौकरी गयी तो मेरे पास सिंगापुर में रहने का कोई स्थायी वीजा नहीं है । मुझे वापस भारत जाकर नौकरी खोजनी पड़ेगी।' थोड़ी देर बाद अंदर से आवाज आयी कि 'जो सूची बनानेवाला है वह आज रात को जागेगा और कल तेरे लिए कुछ अच्छा निर्णय लेगा।' मैं जप करते-करते सो गया।

दूसरे दिन ऑफिस पहुँचा तो मैनेजर मेरा इंतजार कर रहा था। बोला : ''मैं तुम्हारी वजह से रात को २ बजे से जाग रहा हूँ कि तुमको कैसे बचाऊँ क्योंकि तुम्हारे पास कोई काम नहीं है।''

उसने तुरंत मुझे ऐसा काम दिया जो ३ महीने तक चले। उस अंतराल में मुझे पूज्य बापूजी की कृपा से चार जगह से नौकरी के ऑफर आये। उनमें से एक जगह मैंने चुन ली, उसका वेतन भी पहले से ज्यादा है। तब तक मेरा स्थायी वीजा भी आ चुका था।

जब भी हम गुरुदेव को पुकारते हैं तो वे किसी-न-किसी तरह से हमें मदद करते हैं। बापूजी हमारा कितना ध्यान रखते हैं ! जब भी हम विपत्ति में फँसते हैं तो तुरंत बाहर निकाल लेते हैं। भक्तवत्सल पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में सादर दंडवत् प्रणाम ! **- जिग्नेश हालानी, सिंगापुर**

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२७ जुलाई : देवशयनी एकादशी (सर्व पापनाशक, महान पुण्यमय, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करनेवाला व्रत), चतुर्मास व्रतारम्भ (माहात्म्य हेतु पढ़ें पृष्ठ १६)

३१ जुलाई : गुरुपूर्णिमा, ऋषि प्रसाद जयंती (गुरुपूर्णिमा के दिन किया गया गुरुपूजन वर्षभर के सत्कार्यों में सफलता दिलाता है।)

१० अगस्त : कामिका एकादशी (यह महान पुण्यफल प्रदान करनेवाली है। इसका व्रत व रात्रि-जागरण करनेवाला न तो कभी भयंकर यमराज का दर्शन करता है और न कभी दुर्गति में ही पड़ता है।)

१३ अगस्त : गुरुपुष्यामृत योग (सूर्योदय से रात्रि ११-१५ तक) (इसमें किया गया जप, ध्यान, दान, पुण्य महाफलदायी होता है।)

१७ अगस्त : विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-२६ तक) विष्णुपदी संक्रांति में किये गये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल लाख गुना होता है। (पद्म पुराण)

१८ अगस्त : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से १९ अगस्त प्रातः ५-५४ तक) (यह सूर्यग्रहण के बराबर पुण्यदायी है। इसमें किया गया स्नान, दान व श्राद्ध अक्षय होता है।)

पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य से लाभान्वित देश के वरिष्ठ राजनेता व संगठन प्रमुख

भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी
पूर्व प्रधानमंत्री

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
तत्कालीन मुख्यमंत्री, गुज.

श्री चन्द्रशेखर
पूर्व प्रधानमंत्री
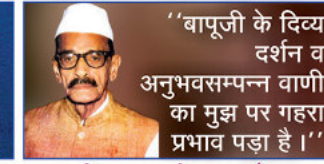
श्री गुलजारीलाल नंदा
पूर्व प्रधानमंत्री

श्री एच.डी. देवेगौड़ा
पूर्व प्रधानमंत्री

श्री राजनाथ सिंह
केन्द्रीय गृहमंत्री

श्री नितिन गडकरी
केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री

सुश्री उमा भारती
केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री

श्री बंडारू दत्तात्रेय, केन्द्रीय रोजगार मंत्री

श्रीमती आनंदी बहन पटेल
मुख्यमंत्री, तत्कालीन शिक्षामंत्री, गुज.

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया
मुख्यमंत्री, राजस्थान

श्री प्रकाश सिंह बादल
मुख्यमंत्री, पंजाब

श्री अशोक सिंहलजी
मुख्य संरक्षक, विहिप

श्री मोहन भागवत
सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

श्री प्रवीण तोगड़िया
अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, विहिप

श्री लालकृष्ण आडवाणी
पूर्व उपप्रधानमंत्री

श्री कलराज मिश्र
केन्द्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्री

श्री उद्धव ठाकरे
शिवसेना प्रमुख

श्री कैलाश विजयवर्गीय
राष्ट्रीय महासचिव, भाजपा

श्री फारुख अब्दुल्ला
तत्कालीन मुख्यमंत्री, जम्मू-कश्मीर

श्रीमती कृष्णा तीरथ, तत्कालीन
केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री
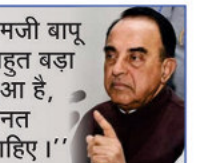
डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी
सुप्रसिद्ध न्यायविद्

श्री मोतीलाल वोरा, कोषाध्यक्ष,
काँग्रेस, पूर्व मुख्यमंत्री, म.प्र.

श्री ई.एस.एल. नरसिम्हन
राज्यपाल, आंध्र प्रदेश

श्री मुरली मनोहर जोशी, तत्कालीन
केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री

श्री गिरधर गोमांग के साथ तूफानग्रस्त
क्षेत्र का अवलोकन करते हुए पूज्यश्री

'ऋषि प्रसाद' स्मृतिचिह्न का विमोचन
करते हुए सुप्रसिद्ध अभिनेता गोविंदा

संत श्री आशारामजी गुरुकुलों के उत्कृष्ट परीक्षा-परिणाम

बारहवीं

नारायण शर्मा	निरंजन गहलोत	आनंद भगत	सागर शर्मा
अहमदाबाद, ९६.४१ PR	अह., ९४.५८ PR	अह., ९३.६७ PR	अह., ९१.६१ PR

हरिओम राऊत	पंकज कश्यप	हरि प्रसाद
अह., ९१.०१ PR	अह., ९०.६३ PR	अह., ९०.५० PR

दसवीं

PR = Percentile Rank

कल्पेश देवरा	अखिलेश मौर्य	जयकिशन हिंगु	उपेश कश्यप
अहमदाबाद, ९८.९९ PR	अह., ९८.३५ PR	अह., ९६.०४ PR	अह., ९३.९४ PR

कृष्णा मछार	नरेश सावरिया	राजकुमार लुनिया	मोहनिया मेहुल
अह., ९३.२४ PR	अह., ९२.७४ PR	इंदौर, ९.२ CGPA	सरकी लिमड़ी, ९१.८ PR

कुप्रचार का सफाया करती सुप्रचार की लहर...

षड्यंत्र की पोल खोलनेवाली

ऋषि प्रसाद नयी खबर (पत्रिका)

सवा करोड़ 'ऋषि प्रसाद - नयी खबर' समाज तक पहुँचाने का महासंकल्प

अधिक जानकारी हेतु अपने नजदीकी आश्रम या अहमदाबाद आश्रम के ऋषि प्रसाद कार्यालय का सम्पर्क करें। दूरभाष : (०७९) ३९८७७७१४/४२.

RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2015-17
WPP LIC No. U (C)-232/2015-17
MNW-57/2015-17
'D' No. MR/TECH/47.6/2015
Date of Publication: 1st July 2015

सवा करोड़ 'ऋषि प्रसाद - नयी खबर' (पत्रिका) समाज तक पहुँचाने के महासंकल्प में भागीदार साधक

ऋषि प्रसाद एवं ऋषि दर्शन सम्मेलन

७ दिवसीय 'सारस्वत्य मंत्र-अनुष्ठान' में उच्च संस्कार व जीवन को महान बनाने के गुर पाते विद्यार्थी

आहवा-डांग क्षेत्र में आदिवासी-गरीब विद्यार्थियों में विद्यार्थी विकास कार्यक्रम
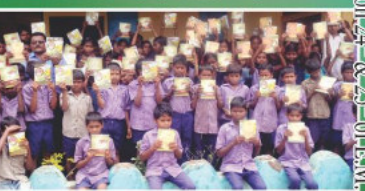
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month * Posting at ND PSO on 10th & 11th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.